SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:52, Issue: 12
May-2022, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

मई-2022

रु.5/-

श्री पद्मावती-श्रीनिवास जी के परिणय महोत्सव, तिरुमल
दि. 10-05-2022 से दि. 12-05-2022 तक

श्री गोविंदराजस्वामीजी का मंदिर - तिरुपति।
ब्रह्मोत्सव
(दि. 05-06-2022 से दि. 13-06-2022 तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
05-06-2022	रवि	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
06-06-2022	सोम	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
07-06-2022	मंगल	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
08-06-2022	बुध	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
09-06-2022	गुरु	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
10-06-2022	शुक्र	हनुमन्तवाहन, सायं : वसंतोत्सव	गजवाहन
11-06-2022	शनि	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
12-06-2022	रवि	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
13-06-2022	सोम	पालकी उत्सव, अवभृथोत्सव, चक्रस्नान	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामीजी का मंदिर - अप्पलायगुंटा।
ब्रह्मोत्सव
(दि. 10-06-2022 से दि. 18-06-2022 तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
10-06-2022	शुक्र	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
11-06-2022	शनि	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
12-06-2022	रवि	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
13-06-2022	सोम	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
14-06-2022	मंगल	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
15-06-2022	बुध	हनुमन्तवाहन, सायं : वसंतोत्सव	गजवाहन
16-06-2022	गुरु	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
17-06-2022	शुक्र	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
18-06-2022	शनि	पालकी उत्सव, अवभृथोत्सव, चक्रस्नान	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

येषामर्थे काङ्क्षित्तं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्दे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च॥
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।
मातुलाः श्वसुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता)

इस युद्ध में सभी राज्य, भोग और सुखादि अभीष्टों को और गुरु, पिता, पुत्र, दादा, मामा, पोते, साले एवं सभी सगे सम्बन्धी धन और जीवन की आशा को छोडकर खडे हैं।

श्रुत्वा गीता मर्थयुक्तां माहात्म्यं यः श्रुणोति च।
तस्य पुण्यफलं लोके भवेत्सर्व सुखावहम्॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

जो मनुष्य अर्थ के साथ गीता का श्रवण करेगा और उसकी महिमा का भी बडी श्रद्धा से श्रवण करेगा उसको इस संसार में सभी पुण्य फल एवं सुख प्राप्त होंगे।

श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का मंदिर - हृषिकेश, नारायणवनम्।

ब्रह्मोत्सव

(दि. 13-05-2022 से दि. 21-05-2022 तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
13-05-2022	शुक्र	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
14-05-2022	शनि	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
15-05-2022	रवि	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
16-05-2022	सोम	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
17-05-2022	मंगल	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
18-05-2022	बुध	हनुमन्तवाहन, सायं : वसंतोत्सव	गजवाहन
19-05-2022	गुरु	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
20-05-2022	शुक्र	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
21-05-2022	शनि	पालकी उत्सव, अवभृथोत्सव, चक्रस्नान	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

श्री वेणुगोपालस्वामीजी का मंदिर - कार्वेटिनगरम्।

ब्रह्मोत्सव

(दि. 23-05-2022 से दि. 31-05-2022 तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
23-05-2022	सोम	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
24-05-2022	मंगल	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
25-05-2022	बुध	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
26-05-2022	गुरु	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
27-05-2022	शुक्र	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
28-05-2022	शनि	हनुमन्तवाहन, सायं : वसंतोत्सव	गजवाहन
29-05-2022	रवि	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
30-05-2022	सोम	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
31-05-2022	मंगल	पालकी उत्सव, अवभृथोत्सव, चक्रस्नान	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५२ मई-२०२२ अंक-१२

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

विषयसूची

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
श्री नृसिंह जयंती	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया	07
वेंकटाचल अंजनाद्री और अंजनासुत हनुमान	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	09
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव, प्रो.गोपाल शर्मा	15
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	18
सती सावित्री	डॉ.के.एम.भवानी	19
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	22
श्रीमद्भगवद्गीता	श्री बी.राजीव रत्न	25
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	31
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	33
श्री रामानुजाचार्य का कृतित्व	डॉ.आर.एम.श्रीनिवासन	35
महर्षि गौतम	डॉ.जी.सुजाता	38
नवयुवकों के विकास में इष्ट भक्ति और गुरु भक्ति का योगदान	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया	42
मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्	श्री के.रामनाथन	45
मई महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
मूँग दाल	डॉ.सुमा जोषी	48
नीतिकथा - दान से भी श्रेष्ठ है ईश्वर के प्रसाद	श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन	50
क्विज	डॉ.एन.दिव्या	51
चित्रकथा - हनुमान की भक्ति कहानी	डॉ.एम.रजनी	52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - अंजनी पुत्र हनुमान, आकाशगंगा, तिरुमल।

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

'धर्मो रक्षति रक्षितः'

'धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्म की रक्षा से ही मानव-जीवन सुखी, संतोषमय और सफल हो सकता है। सनातन भारतीय हिंदु धर्म अत्यंत सुलभ और सुनियोजित धर्म है। इस धर्म की रक्षा के लिए और उसे और सशक्त बनाने के लिए धर्म भूमि भारत-वर्ष में समय-समय पर अनेक महात्मा, महानुभाव, आचार्य, कवि क्या हैं स्वयं भगवान भी अवतरित हुए हैं। एक ही समय में एक साथ ऐसे लोगों का आगमन होना अद्भुत है। वैसा ही समय वैशाख मास है। उत्तरायण की ग्रीष्म ऋतु के इस मास में सनातन हिंदु धर्म की रक्षा हेतु ही भगवान श्री महाविष्णु परशुराम, कूर्मावतार व नरसिंह अवतार लेकर धरती पर पधारे हैं।

क्षत्रिय दंभ को मिटाने और ब्रह्मणत्व के सहज धर्म की रक्षा हेतु श्रीहरि ने परशुराम का अवतार लिया है। उन्होंने सहस्र बाहु कार्तवीर्यार्जुन का वध करके क्षत्रिय दंभ को मिटाकर सनातन धर्म को सुदृढ किया। कूर्म अवतार धारण कर क्षीरसागर के समुद्रमंथन के समय मंदर पर्वत को अपने पीठ पर रखकर, वासुकी नामक नाग की सहायता से देव-दानवों ने समुद्र मंथन करके चौदह रत्नों की प्राप्त की। इस समय भगवान मोहिनी रूप भी धारण किया था। भक्तवत्सल श्री महाविष्णु हिंदु धर्म में भक्ति के महत्व की स्थापना के लिए, भक्तवत्सल अपने नाम को सार्थक बनाने लिए एक खंभे से नरसिंह रूप धारण करके अवतरित हुए। भक्त प्रह्लाद द्वारा श्री महाविष्णु ने सनातन हिंदु धर्म वैष्णव भक्ति को सुदृढ बनाया है।

दास भक्ति के परम भक्त और अपने जीवन को सिर्फ राम नाम से धन्य बनानेवाले हनुमान भी वैशाख मास में पैदा हुए। भगवान को भक्ति से और उस भक्ति को सेवा से प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे निस्वार्थ सेवाभाव से भगवान भक्त सुलभ बन जाता है। ऐसे जीवंत उदाहरण से हनुमान ने सनातन हिंदु धर्म में दास्य भक्ति को समुन्नत बनाया है। जब भिन्न-भिन्न प्रकार के धार्मिक विचारों से सनातन हिंदु धर्म खतरे में पड गया था तब आदिशंकराचार्य अवतरित हुए थे इसी वैशाख मास में। उन्होंने पथ भ्रष्ट होनेवाले हिंदु धर्म को पुनःजीवित करके अपने अद्वैत सिद्धांत से परम ब्रह्म के सच्चे रूप की प्रतिष्ठा की है। धर्म का आचरण, सामाजिक समता से ही संभव है, विशिष्टाद्वैती श्री रामानुजाचार्य भी वैशाख मास में ही पैदा हुए हैं। अपने अप्रतिम सिद्धांत और अनुपम विचारों से हिंदु समाज के सारे वर्णों के एकीकरण से हिंदु धर्म की उन्होंने रक्षा की है।

इस मास का वैशिष्ट्य है कि अन्नमाचार्य और मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा जैसे कवि-कवयित्री भी इस मास में पैदा हुए हैं। अपने हजारों संकीर्तनों से अन्नमाचार्य ने वैष्णव-भक्ति का प्रचार करके भक्त और भगवान के बीच की दूरी को मिटा दिया। अमृत तुल्य अपने संकीर्तनों से भक्ति, श्रृंगार और आध्यात्मिक विषयों को उन्होंने जन-जन में फैला दिया। स्त्रियों के सामाजिक और वैयक्तिक अधिकारों के लिए संघर्ष करनेवाली कवयित्री मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से तथा अपनी भक्ति-प्रपत्ति के द्वारा कलियुग देव श्री वेंकटेश्वर को प्रसन्न करके 'मुत्याल हारती' नाम से अपनी प्रपत्ति को शाश्वत रूप दिया है। इन सारे महात्माओं एवं महानुभावों के आगमन से हिंदू धर्मावलंबी सभी भारतीयों के लिए यह वैशाख मास उनका स्मरण करने का सर्वाधिक पुण्य काल बना हुआ है।

श्री नृसिंह जयंती

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया
मोबाइल - 9825113636

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी का पवित्र दिन भारतवर्ष में नृसिंह जयंती के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन श्रीहरि विष्णु ने नृसिंह के रूप में अवतार लिया था।

'नरसिंह' नर+सिंह (''मानव+सिंह'') को पुराणों में भगवान विष्णु का अवतार माना गया है। (1) जो आधे मानव एवं आधे सिंह के रूप में प्रकट होते हैं, जिनका सिर एवं धड तो मानव का था लेकिन चेहरा एवं पंजे सिंह की तरह थे। (2) वे भारत में, खासकर दक्षिण भारत में वैष्णव संप्रदाय के लोगों के द्वारा एक देवता के रूप में पूजे जाते हैं जो विपत्ति के समय अपने भक्तों की रक्षा के लिए प्रकट होते हैं।

नृसिंह उत्पत्ति की कथा

महर्षि कश्यप ने दक्ष प्रजापति की सत्रह कन्याओं से विवाह किया। उन सत्रह पत्नियों से एक पत्नी का नाम दिति था उन्होंने सर्वप्रथम तीन पुत्रों को जन्म दिया। दिति के पुत्र होने के कारण उन्हें दैत्य कहा गया उन तीन पुत्रों के नाम हैं - वज्रांग, अरुण और हयग्रीव। इनमें से हयग्रीव का वध भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार लेकर किया और अरुण का वध माता पार्वती ने भ्रामरी रूप लेकर किया। बाकी वज्रांग ने तप करना प्रारंभ कर दिया दिति ने दो ऐसे पुत्रों की मांग कश्यप मुनि से की जिनसे तीनों लोक भी कांप उठें। समय आने पर दिति के गर्भ से कश्यप मुनि को दो पुत्र प्राप्त हुए। सोने के समान उनके बाल होने के कारण पहले पुत्र का नाम हिरण्यकशिपु और दूसरे पुत्र का नाम हिरण्याक्ष रखा गया। हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को रसातल में डुबो दिया था पृथ्वी को रसातल से निकालने के लिए भगवान विष्णु वराह रूप में भगवान ब्रह्म के नाम से प्रकट हुए। उन्होंने हिरण्याक्ष का वध किया और पृथ्वी को रसातल से निकाला। अपने प्राण प्रिय भाई की मृत्यु से दुःखी और क्रोधित हिरण्यकशिपु ने भाई की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए अजेय होने का संकल्प किया। सहस्त्रों वर्षों तक उसने कठोर तप किया। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने उसे अजेय होने का वरदान दिया। वरदान प्राप्त करके उसने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। अहंकार से युक्त हिरण्यकशिपु प्रजा पर अत्याचार करने लगा। इसी दौरान हिरण्यकशिपु की पत्नी कयाधु ने नारद मुनि की कुटिया में एक बालक को जन्म दिया और हिरण्यकशिपु के महल में उसने अन्य तीन पुत्रों को जन्म दिया। उनके नाम थे प्रह्लाद, अनुहल्लाद,

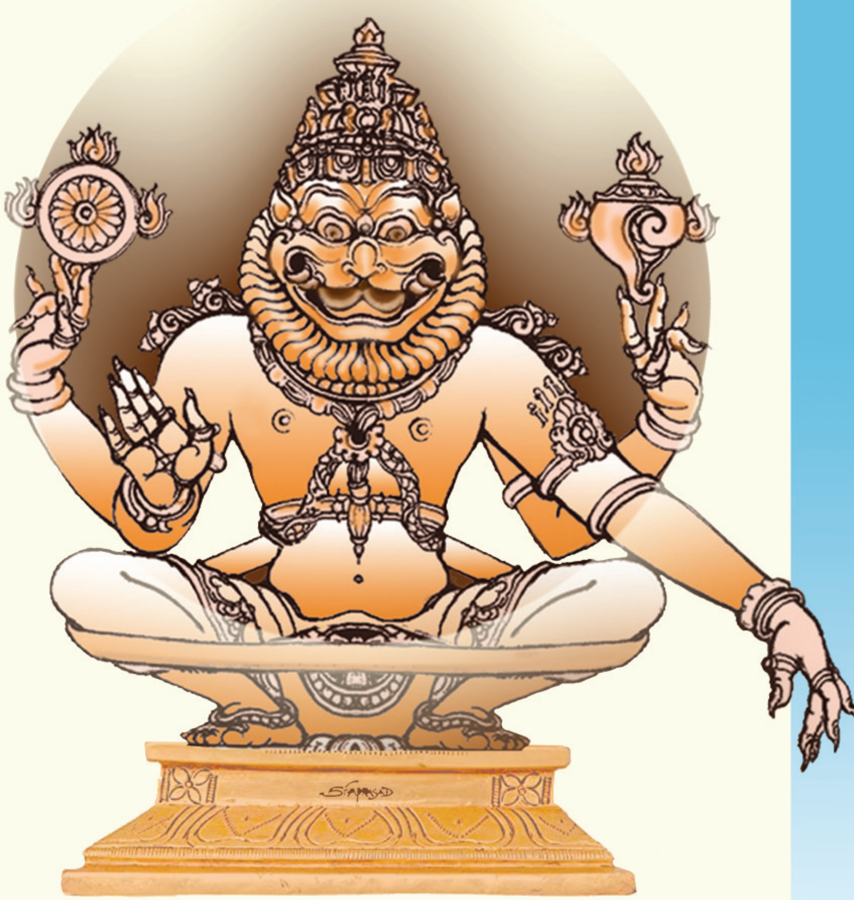

सहलाद और हलाद। हिरण्यकशिपु के ज्येष्ठ पुत्र प्रह्लाद में कोई दुर्गुण मौजूद नहीं थे तथा वह भगवान नारायण का भक्त था। वह अपने पिता हिरण्यकशिपु के अत्याचारों का विरोध करता था। भगवान-भक्ति से प्रह्लाद का मन हटाने और उसमें अपने जैसे दुर्गुण भरने के लिए हिरण्यकशिपु ने बहुत प्रयास किए। नीति-अनीति सभी का प्रयोग किया, किंतु प्रह्लाद अपने मार्ग से विचलित न हुआ। तब उसने प्रह्लाद को मारने के लिए षड्यंत्र रचे, किंतु वह सभी में असफल रहा। आखिर में हिरण्य कशिपु ने प्रह्लाद को खंभे में बांधकर मारना चाहा। तभी खंभे को चीरकर नृसिंह भगवान प्रकट हो गए और हिरण्यकशिपु को पकडकर अपनी जाँघों पर रखकर उसके पेट को नाखूनों से फाड़ डाला और उसका वध कर दिया।

नृसिंह भगवान की प्रार्थना

नरसिंहदेव के बारे में कई तरह की प्रार्थनाएँ की जाती हैं जिनमें कुछ प्रमुख ये हैं :

नरसिंह मंत्र ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।। (हे क्रुद्ध एवं शूर-वीर महाविष्णु, तुम्हारी ज्वाला एवं ताप चतुर्दिक फैली हुई है। हे नरसिंहदेव, तुम्हारा चेहरा सर्वव्यापी है, हम मृत्यु के भी यम हो और मैं तुम्हारे समक्ष आत्मसमर्पण करता हूँ।)

नरसिंह भगवान के अनेक नाम

नरसिंह, नरहरि, उग्र, वीर, महाविष्णु, हिरण्यकशिपु आदि।

नरसिंह मूर्ति के दस (१०) प्रकार

उग्र नरसिंह, क्रोध नरसिंह, मलोल नरसिंह, ज्वाला नरसिंह, वराह नरसिंह, भार्गव नरसिंह, करन्ज नरसिंह, योग नरसिंह, लक्ष्मी नरसिंह, छत्रावतार नरसिंह।

नरसिंह देव मंन्दिर

खरकडा, खेतडी, राजस्थान - यह मंदिर सतयुग कालीन है। कहते है कि यहाँ पर भृगु ऋषि ने तपस्या की थी। जब विष्णु जी ने नृसिंह जी का अवतार ले कर हिरण्यकश्यप का वध किया, तब भृगु ऋषि ने भगवान विष्णु को याद किया और तब भगवान नृसिंह जी ने उन्हें दर्शन दिए और यहाँ पर अपने नाखूनों से एक कुंड को बनाया और अपने शरीर को साफ किया और यही पर अंतर्धान हुए। यहाँ पर नृसिंह चौदश को भगतों का तांता लगा रहता है। इस मंदिर को औरंगजेब ने नष्ट कर दिया था। बाद में इसका फिर से जीर्णोद्धार हुआ है।

पुराणों में कहा गया है कि जो भी मानव नृसिंह कथा सुनता है और उनका अनुसंधान करते है वे अनेक पापों से मुक्त होकर धन्य हो जाते हैं। कथा के अंत में श्रीहरि विष्णु के ये नृसिंह अवतार को कोटी-कोटी नमन।

जय श्रीमन्नारायण

वेंकटाचल, शेषाचल, वेंकटाद्री, सप्तगिरि, सप्ताचल आदि नामों से प्रसिद्ध पर्वत श्रृंखला कलियुग के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर का आवास स्थल है। भगवान श्री वेंकटेश्वर के आनंदनिलय का परम पवित्र पुण्य क्षेत्र है। यह साक्षात वैकुंठ के क्रीडाचल का ही प्रतिरूप है। कलियुग वैकुंठ माना जाता है। लक्ष्मी माता के वैकुंठ छोडने पर वैकुंठ से विमुख श्री महाविष्णु धरती पर पधार कर श्री वेंकटेश्वर के रूप में यहीं पर बसे हैं। यही कलियुग के मानवों को अपने वरद हस्तों से रक्षा करनेवाले भक्त-वत्सल देव श्री बालाजी का पुण्य स्थल है। श्री वेंकटेश्वर भगवान को सप्तगिरीश इसलिए कहा जाता है कि शेषाचल सात पर्वतों की माला है। उन सात पहाडों में एक पहाड का नाम 'अंजनाद्री' है। पूरा-कथाओं में इस के भी प्रमाण प्राप्त होते हैं कि कभी इस पूरी पर्वत-श्रृंखला का नाम अंजनाचल या अंजनाद्री था। इस का वैभव और महिमा अपार है। अनेक वनस्पतियों, फल-पुष्पों एवं मधुर जलों से पुनीत यह अंजनाद्री भारतीयों का आराध्य देव श्री हनुमान का जन्म स्थल भी है। हाल ही में तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति ने बडी मेहनत करके पुराण, इतिहास और काव्यों से अनेक प्रमाण जुटाकर अंजनाद्री पहाड में स्थित 'आकाशगंगा' प्रदेश को हनुमान के जन्म स्थल के रूप में सिद्ध किया है। महत्व की बात यह है कि आकाशगंगा के पास बालहनुमान और अंजना देवी के अतिप्राचीन मंदिर हैं।

श्री वेंकटेश्वर भगवान की परम पवित्र भक्तिन मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा के तेलुगु प्रबंध काव्य 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यम' में इस का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है। काव्य के चतुर्थ आश्वास में यह स्पष्ट कहा गया है कि त्रेतायुग में शेषाचल का नाम अंजनाचल था। यहीं पर

वेंकटाचल अंजनाद्री और अंजनासुत हनुमान

- आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

अंजना देवी ने पुत्र संतान के लिए तप किया था। आकाशगंगा के पास कठोर तप करने के बाद ही वायु देव के अनुग्रह से हनुमान को जन्म दिया था। हनुमान का बचपन भी आकाशगंगा के पास ही बीता था। यहाँ पर स्थित बालहनुमान का मंदिर ही इस का साक्ष्य प्रमाण है। इस के अलावा दो और प्रमाण हनुमान के इस वेंकटाचल के साथ घनिष्ठ संबंध जोडते हैं। पहला तिरुमल श्री वेंकटेश्वर के मंदिर आनंदनिलय के सामने स्थित 'बेडि आंजनेय स्वामी मंदिर' और दूसरा जाबाली तीर्थ में स्थित 'हनुमान' का मंदिर। पहलेवाला 'बेडि आंजनेय स्वामी मंदिर' अतिप्राचीन है। इस मंदिर में बेडियों में जकडे हुए बालहनुमान की मूर्ति है। माना जाता है कि बचपन में हनुमान बहुत शरारती थे। नटखट किया करते थे। मंदिर के इर्दगिर्द रहनेवाले मुनियों को तथा लोगों को अपनी शरारती से तकलीफ पहुँचाते थे। लोगों की शिकायतों से तंग आकर माँ अंजना ने हनुमान को बेडियों से बांध दिया था। उसी ऐतिहासिक घटना के अनुसार इस मंदिर में मूर्ति को बेडियों से जकडे बालहनुमान के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था। दूसरा जाबाली तीर्थ में स्थित हनुमान का भव्य मंदिर है। यह हनुमान का महिमावान मंदिर है। ये दोनों हनुमान के बचपन और जन्म को अंजनाद्री में होने के पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

इससे एक बात की पुष्टि और हो जाती है कि वेंकटाचल पर्वत अतिप्राचीन है। त्रेतायुग से भी पहले से इस पर श्री वेंकटेश्वर भगवान बसे हैं। इस पर बसे देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर भी अतिप्राचीन हैं। क्यों कि दशरथ, जनक, राम, वानर आदि राम कथा के अनेक पात्रों एवं कथाओं का संबंध वेंकटाचल पर्वत के साथ है। पुराणों से भी इस की पुष्टि होती है। स्वामिपुष्करिणी से पुनीत होकर ही जनक, दशरथादि ने अपने अभीष्ट फल-प्राप्ति की थी। वेंगमांबा का 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यम' काव्य इस की यशोगाथा भी गाता है। वेंगमांबा का विचार है कि त्रेतायुग में इस वेंकटाचल का नाम अंजनाचल या अंजनाद्री था। अपने काव्य के चतुर्थ आश्वास में उन्होंने इस के बारे में स्पष्ट लिखा है।

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा कृत 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यम' काव्य के चौथे आश्वास में नैमिशारण्य में 'श्री वेंकटाचल की महिमा' के बारे में सुनने की इच्छा रखनेवाले मुनियों को सूत ने शतानंद और जनक की कथा बतायी थी। जिस में जनक के द्वारा शतानंद से श्री वेंकटाचल की महिमा और उस के भिन्न नामों को जानने की जिज्ञासा प्रकट करने पर शतानंद ने समय-समय पर उस के अलग-अलग नाम प्रसिद्ध होने की कथा सुनायी थी। काव्य में जनक के इस रूप में पूछने पर ''हे मुनिनाथ! वृषभाद्री पर्वत को अंजनाद्री नाम कैसे पडा?'' कहने पर शतानंद ने इस रूप में कहा।'' केसरी नामक एक वानर की पत्नी को संतान नहीं थी। उसने मतंग ऋषि के पास जाकर नमस्कार करके कहा। 'हे मुनिवर्य! पुत्रहीन को पुण्यगति प्राप्त

नहीं होती है, ऐसा वेद पुरुषों ने कहा है। इसलिए मुझे पुत्र संतान चाहिए। उस के लिए मैं तप करना चाहती हूँ। आप आज्ञा दीजिए।' ऐसी प्रार्थना करने पर अंजना देवी से उस मुनि ने इस रूप में कहा। 'हे देवी! यहाँ से पंपा नदी के पूरब में जाने से पचास योजनाओं की दूरी पर नृसिंह आश्रम नाम से एक स्थल है। उस के पश्चिम भाग में प्रकाशवान नारायणाद्री प्रदेश में परम पवित्र स्वामी की पुष्करिणी के उत्तर में एक क्रोस दूरी पर आकाशगंगा नामक एक प्रवाह है। तुम वहाँ जाकर त्रिकालों में स्नान करते हुए द्वादशाब्धों तक तप करो। तब तुझे पुत्र संतान होगी।' उसे सुनकर 'महाप्रसाद' कहते अंजना देवी मुनि को नमस्कार करके उनकी आज्ञा लेकर नारायणाद्री पहुँच गयी। वहाँ स्वामिपुष्करिणी में स्नान करके उस के तट पर रहनेवाले वृक्षों की परिक्रमा करके, वराह स्वामी के दर्शन करके उन की पूजा करके वहाँ से आकाशगंगा पहुँच गयी। वहाँ रहनेवाले मुनियों को नमस्कार करके उन से अनुमति प्राप्त करके आकाशगंगा में त्रिकालों में स्नान करते हुए निराहारी होकर अंजना देवी ने एक वर्ष तप किया। तब वायु देव प्रसन्न होकर उन्हें प्रत्यक्ष हुए। प्रत्येक दिन वे एक फल अंजना देवी को देते रहे। उन फलों को खाते अंजनादेवी ने द्वादश वर्षों तक तप किया। तब एक दिन पवन देव ने सद्वीर्य एक मधुर फल अंजना देवी को दिया। अंजना देवी ने उस फल को खाकर गर्भ धारण किया। एक दिन संयमींद्र मुनि को स्वप्न में दिखाई दिया कि पवन देव ने अंजना देवी के गर्भ में प्रवेश किया है। तब उन का संशय दूर हो गया।

दस महीने बीत गए। तब धरती पर अंजना देवी के गर्भ से एक महान पुत्र का जन्म हुआ। यह देख कर देवतागण ने संतोष के साथ फूलों की वर्षा की। घन वज्रांग, दीर्घ वाल, लसत्कांति, बल-स्थैर्य के साथ बालक को देखकर मुनियों ने 'धरती पर यह आंजनेय महा मुख्य होंगे।' ऐसा आशीर्वाद दिया। साथ ही मारुताज्मा पर आसक्त होते सब मिल कर अत्यंत उत्साह और आह्लाद से उन्हें 'हनुमान' नामकरण किया।

त्रेतायुग में अंजना देवी ने इस रूप में तप करके पुत्रवती होने के निमित्त से इस पर्वत का नाम अंजनाद्री के रूप में प्रसिद्ध हुआ। 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यम' काव्य के इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि अत्यंत महिमावान, अतुलित बलशाली, कारण जन्म हनुमान का जन्म श्री वेंकटाचल पर्वत पर ही हुआ था। त्रेतायुग की राम कथा के साथ इस पहाड का सीधा संबंध है। बचपन में हनुमान का क्रीडा स्थल श्री वेंकटाचल ही था। आगे राम कथा में अत्यंत प्रमुख पात्र के रूप में तथा रामावतार की लक्ष्यपूर्ति में अतुलनीय कार्य संपन्न करनेवाले अपने अप्रतिम व्यक्तित्व और अनुपम पराक्रम चरित्र का परिचय देनेवाले हनुमान इस वेंकटाचल से इस रूप में संबंध रखते हैं। रामायण में राम के साथ-साथ हनुमान का चरित्र अत्यधिक प्रमुख है। क्योंकि मानव जीवन के अनेक आदर्श और विलक्षण गुण राम में हैं और हनुमान के चरित्र में भी दिखाई देते हैं।

राम कथा भारत में मानव जीवन विधान को नियमन एवं नियंत्रण करती है। इस का मूल कारण उस का सृजन मानव

जीवन के लिए ही किया गया है। साक्षात परब्रह्म ने मानव के रूप में अवतार लेकर मानवों को एक आदर्श जीवन विधान को वरदान के रूप में बिना मांगे दे दिया है। अतः राम कथा सिर्फ साहित्य नहीं है बल्कि इतिहास और जीवन चरित है। राम कथा का सृजन मानवादर्श के रूप में किया गया है। उस के पात्र और प्रसंग सब कुछ मानवादर्श ही हैं। राम कथा का बृहद सत्य धर्मपरायणत्व है। इस में मानवोचित सभी धर्मों का पालन करके आदर्शों की प्रतिष्ठा की गयी है। पारिवारिक धर्म, राजनीतिक धर्म, आर्थिक धर्म एक क्या सर्वोत्तम सभी धर्मों की प्रतिष्ठा राम कथा में हुई है। उन धर्मों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण धर्म सेवा धर्म है। स्वामी और सेवक धर्म की जो प्राण प्रतिष्ठा राम कथा या रामायण में हुई है वह अन्यत्र दुर्लभ है। स्वामी राम हैं तो सेवक हनुमान हैं।

राम कथा में सेवा धर्म का सर्वोत्तम उदाहरण एकादश रुद्रावतार हनुमान में देखते हैं। हालांकि भरत, शत्रुघ्न, गुह, शबरी, सुग्रीव, विभीषणादि पात्र भी आदर्श सेवकों के रूप में सृजित हैं। किंतु हनुमान कारण जन्म हैं। सेवा की प्राण प्रतिष्ठा के लिए हनुमान का अवतार हुआ है। एक पौराणिक कथा इस का समर्थन करती है। शिव और केशव के बीच में हुई एक प्रतियोगिता में शिव हार गए। प्रतियोगिता की शर्तों के तहत शिव ने केशव को आश्वासन दिया कि वे उन का सेवक बनेंगे। उसी शर्त के तहत शिव एकादश रुद्रावतार के रूप में रामावतार में अंजनी के गर्भ से हनुमान के रूप में पैदा हुए। यह पौराणिक कथा स्पष्ट करती है कि सेवक-सेव्य धर्म की प्रतिष्ठा के लिए ही हनुमान पैदा हुए। फिर भी राम मिलन तक हनुमान का यह धर्म परायणत्व अमल में नहीं आया। राम और हनुमान का प्रथम मिलन कब हुआ? कहाँ हुआ? इसे लेकर राम कथा के विविध रूपों में विविध प्रकार से प्रस्ताव है। प्रसिद्ध विवरण यही है कि सीतान्वेषण के लिए वन में भटकनेवाले राम के साथ प्रथम मिलन हनुमान का हुआ है। हनुमान के द्वारा ही सुग्रीव और राम के बीच में मैत्री स्थापित हुई है। परंतु उन का जन्म किष्किंधा से दूर श्री वेंकटाचल अंजनाद्री पर हुआ।

रामायण के हनुमान पात्र कारण जन्म है। पौराणिक इतिवृत्त के अनुसार भगवान विष्णु की सेवा करने हेतु ही हनुमान एकादश रुद्रावतार के रूप में पैदा हुए हैं। वानर के रूप में पैदा होने में ही रावण-वध के लोकोद्धार करने के कारण का पता चलता है। रावण के द्वारा ब्रह्म से प्राप्त वरदानों के अनुसार ही साक्षात विष्णु - मानव के रूप में तथा हनुमान - वानर के रूप में पैदा हुए हैं। राम और हनुमान इस रूप में रामायण में अद्वितीय द्वय-पात्र हैं। राम कथा मूल कथा के पीछे इन दोनों पात्रों का अविभाजित, अप्रमेय संबंध है। जिस रूप में राम का कारण जन्म है उसी रूप में राम कथा में हनुमान का भी

कारण जन्म है। एक स्वामी और एक सेवक के रूप में अपने बृहद उद्धेश्य राक्षस संहार और लोक रक्षा को चरितार्थ करने पैदा हुए हैं। कवि कोकिल वाल्मीकि ने उन के इस जन्म रहस्य के साथ-साथ एक और बडे आदर्श को मानव संस्कृति के सामने रखा है। वह है सेवक और सेव्य का आदर्श है। स्वामी होतो राम और सेवक होतो हनुमान। सेवक धर्म के उच्चादर्श के द्वारा वाल्मीकि ने न केवल भारतीय सामाजिकता को संपुष्ट किया बल्कि मानवधर्म निभाने प्रत्येक मानव को प्रेरित किया। सेवा धर्म प्रत्येक मानव के लिए समाज में जीने के लिए प्रथम कर्तव्य है। समाज में मानव को सुखमय एवं सुविधामय जीवन जीना हो तो अवश्य दूसरों की सेवा करने से तथा दूसरों की सेवा प्राप्त करने से ही संभव होगा। इस बहुत बडे सामाजिक-सत्य को वाल्मीकि और अन्य रामायण कवियों ने हनुमान के चरित्र के द्वारा मानव सभ्यता के सामने प्रस्तुत किया है। हनुमान के चरित्र-गुणों के विश्लेषण से सेवा धर्म के इस वैशिष्ट्य का पता चलता है।

1. समर्पण भाव :-

सेवा धर्म का सब से बडा गुण सेवक का स्वामी के प्रति समर्पण भाव का होना है। सेवक जब पूर्ण समर्पण भाव से जुटता है तभी वह अपने स्वामी की पूर्ण सेवा कर सकता है। यह समर्पण भाव सिर्फ बाह्य नहीं है बल्कि बाह्य और आंतरिक दोनों है। सेवक अपने 'मैं' तत्व को मिटाकर स्वामी की सेवा में जुटता है तो वह उच्च स्तरीय सेवा कर सकता है। अन्यथा उस की सेवा अधूरी ही रह जाती है। हनुमान चरित्र में राम के प्रति पूर्ण समर्पण भाव है।

हनुमान के रोम-रोम में राम है। हनुमान के प्रत्येक अणु राम के प्रति समर्पित है। यह समर्पण भाव हनुमान में अनायास और सहज ही दिखाई देता है। ऋष्यमूक पर्वत में पहली बार मुनिवेश में राम के दर्शन के साथ ही हनुमान में इस भाव का उदय होता है। पहली भेंट में ही राम हनुमान के इस भाव को पहचानते हैं। ऋष्यमूक पर्वत के पास सुग्रीव की आज्ञा से हनुमान राम का परिचय प्राप्त करते हैं। कवि कोकिल वाल्मीकि ने इस प्रथम मिलन में ही राम के मुँह से हनुमान के बारे में उच्च कोटी के वचनों का उल्लेख करवाया है---

संस्कार क्रम संपन्नाम अद्भुताम अविलंबिताम।
उच्चारयति कल्याणीम वाचम हृदयहारिणीम।।
अनया चित्राया वाचा त्रिस्थानव्यंजनस्थया।
कस्यनाराध्यते चित्तम उद्यत सेररेरपि।।

अर्थात हनुमान से उच्चरित भाषा ऐसी संस्कारयुक्त भाषा है कि ऐसे मीठे वचनों को सुनकर शत्रु भी बिना संहार किए उसे छोड देगा। इस के अतिरिक्त हनुमान के वचन हृदय को जीतनेवाले हैं। हनुमान से प्रथम मिलन में ही उन की उदात्तता को हृदय को जीतनेवाले उन के संस्कारयुक्त वचनों को तथा अपने स्वामी सुग्रीव के प्रति समर्पण भाव को राम पहचानते हैं।

हनुमान का समर्पण भाव अनुपम है। साधारणतया सेवक स्वामी के सुखों में ही साथ रहते हैं और साथ देते हैं। दुःख की घडियों में उन से अलग होने की चेष्टा करते हैं। किंतु हनुमान ऐसे

नहीं है। सुग्रीव के दुर्दिनों में तथा राम के दुःख के दिनों में दोनों का साथ देते हैं। दोनों के जीवन के उद्धार के लिए मुख्य भूमिका निभाते हैं। यही हनुमान की समर्पण-निष्ठा का मूल मंत्र है। सुग्रीव को वाली से बचाने राम के साथ उन का समझौता कराते हैं। राम को सीता से मिलाने जलधि लांघकर रावण वध के लिए मुख्य कारण बनते हैं। संजीवनी लाकर लक्ष्मण को मृत्यु मुँह से जिलाते हैं। ये सभी उत्कृष्ट सेवा-कर्म हनुमान पूर्ण समर्पण भाव से करते हैं। राम के लौटने का समाचार भरत को देकर उन्हें देह त्याग से बचाते हैं। यह समर्पण भाव की चरमोत्कर्ष स्थिति है। हनुमान के किसी भी कार्य में सेवा कर्म को छोडकर स्वार्थ गुण दिखाई नहीं पडता है। आखिर लंका दाह भी हनुमान रावण के युद्ध तंत्र को तथा रावण की शक्ति को जानने के लिए ही करते हैं। स्वामी के आदेश के बिना भी उस कर्म में हनुमान के अपने स्वामी के प्रति तथा अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण भाव को देख सकते हैं। अतः हनुमान जैसा सेवक किसी भी स्वामी के लिए न भूतो न भविष्यति है। वर्तमान के लिए भी हनुमान जैसा सेवक होना चाहिए। स्वामी के सुख-दुखों में सेवक अपनी सेवाओं को पहुँचाना चाहिए। खासकर सामाजिक जीवन में कार्यरत प्रत्येक आदमी अपने को जन-जन का सेवक समझना चाहिए। हनुमान के चरित्र से इसी उच्च भाव का संदेश मिलता है।

2. कार्यसाधक गुण :-

हनुमान अत्युत्तम एवं अप्रतिम कार्यसाधक हैं। उस के कार्यसाधक होने का प्रमाण इस बात से होता है कि हजारों लाखों वानरों में जो सीता की खोज करने जा रहे हैं, सिर्फ हनुमान को ही राम अपनी अंगूटी प्रदान करते हैं। क्योंकि राम को सही अनुमान था कि हनुमान में कार्यदक्षता है। हनुमान के द्वारा ही सीता का पता चलेगा। सुग्रीव को भी हनुमान की कार्यदक्षता पर विश्वास था। इसलिए सुग्रीव ने भी हनुमान को ही विशेष संदेश देकर भेजा है। सीतान्वेषण के लिए भेजते समय राम के मन में हनुमान के कार्यसाधक गुणों के बारे में सोचने का वर्णन वाल्मीकि महाकवि ने किया है--

सर्वधा निश्चितार्थो यम हनूमति हरीश्वरः।
निश्चितार्थक रच्चापि हनुमान कार्य साधने।।

अर्थात किसी भी दशा में कार्य को संपन्न करने का दृढ निश्चय हनुमान में रहता है। इस रूप में हनुमान सर्वथा कार्यसाधक हैं। हनुमान की इस कार्य-दक्षता को सुग्रीव और श्रीराम दोनों जानते हैं। इसलिए सीतान्वेषण के संदर्भ में दोनों हनुमान पर ही विश्वास रखते हैं। अधिक दायित्व उन्हीं को सौंपते हैं।

कार्यसाधक के लिए कुछ विशेष गुणों की आवश्यकता होती है। उन गुणों में सर्वप्रथम गुण एकाग्रता है। किसी भी कार्य को सठीक ढंग से पूरा करना है तो साधक को सब से पहले एकाग्रता होनी चाहिए। एकाग्रता सिर्फ अपने लक्ष्य पर ही रखना साधक के लिए आवश्यक है। हनुमान में ऐसी एकाग्रता को देख सकते हैं। साक्षात देवतागण ने हनुमान की एकाग्रता की परीक्षा ली है। हनुमान शतयोजन पार सीता की खोज करने सागर को लांघने लगे हैं। हनुमान के साहस को तथा एकाग्रता को जानने के लिए देवतागण ने हनुमान के यत्न में बाधा डालने सुरसा नामक एक नाग-माता को भेजा। सुरसा ने हनुमान के मार्ग को अवरोध करना चाहा। हनुमान को अपनी ओर आकर्षित करने की प्रयत्न की है। लेकिन हनुमान सुरसा की ओर आकर्षित नहीं हुए। सूक्ष्म रूप ग्रहण करके सुरसा से रामाज्ञा के बारे में बताया। फिर भी सुरसा ने रास्ता नहीं दिया। सुरसा ने अपना विशाल मुँह खोलकर हनुमान को निगलने की प्रयत्न की। तब कार्यसाधक हनुमान अत्यंत सूक्ष्म रूप ग्रहण करके सुरसा के मुँह बंद करने के पहले ही बाहर निकल गए। यह हनुमान की एकाग्रता का परिचायक है।

क्रमशः

गतांक से

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यह्लनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - 6

विष्णु का निवास धाम वेंकटाद्रि

(भविष्योत्तर पुराण, अध्याय - 2)

प्रथम तीनों युगों (कृत, त्रेता और द्वापर) में विष्णु वेंकटाद्रिवासी रहे हैं। कलियुग के आरंभ में उन्होंने अपने बारे में और वैकुण्ठ के संबन्ध में सोचा। साथ-साथ नित्यों, मुक्तों के बारे में भी विचार किया। श्रीदेवी, भूदेवी और नीला देवी के साथ वे वैकुण्ठ चले। इस क्षेत्र का, वेंकटाचल का भार, वराह स्वामी को सौंपकर, वे वैकुंठ चले गये।

एक बार नारद मुनि वेंकटाचल पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर उनको सूचना मिली कि विष्णु भगवान वैकुंठ वापस लौट गये। तुरन्त नारद जी ने सत्यलोक जाकर इसकी सूचना ब्रह्म को दी। उन्हें खेद हुआ। उन्होंने नारद से कहा कि जब विष्णु वेंकटाद्रि पर थे तब पृथ्वी के निवासी पवित्र मनवाले और विशिष्ट व्यवहारवाले रहे थे। वराह जी अब इस स्थिति को शायद संभाल नहीं सकते। ब्रह्मोत्सव का निर्वाह भी सही ढंग से चला नहीं पायेंगे। ब्रह्म ने ही स्वयं श्री वेंकटेश्वर के ब्रह्मोत्सव का आरंभ किया था। उन्होंने ही एक इमली के पेड को एक स्थान पर बोया था। वसुदेव और दशरथ के अहं को प्रेरित करेंगे तथा देवकी देवी और कौसल्या देवी दोनों की शक्तियों को भी। वे इस इमली के वृक्ष के नीचे एक वल्मीक में रहे। उन्हें लगा कि उससे ही आगे का कार्य सरल होगा। अब नारद को श्री विष्णु को वैकुंठ से वेंकटाद्रि पर लाने का प्रयास करना होगा जिससे वे आकर वल्मीक में बसे।

ब्रह्म का आदेश लेकर नारदजी गंगा नदी के किनारे पर पहुँचे। वहाँ कश्यप मुनि अन्य मुनियों के साथ यज्ञ कर रहे थे। उनसे नारदजी ने पूछा कि यज्ञ फल किस देव को वे अर्पित करनेवाले हैं? भृगु और अन्य ऋषि वहाँ उपस्थित थे। वे आपसी विचार विमर्श से इस संबन्ध में किसी प्रकार के निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके। अंततः सब ने भृगु महर्षि से इस संबन्ध में कुछ निर्णय लेने के लिए कहा। भृगु महर्षि को हविस और यज्ञ फल

प्राप्त करने योग्य देव की परीक्षा लेनी थी। उनका निर्णय सब के लिए मान्य होगा। तदर्थ, पहले निर्णय लिया गया कि त्रिमूर्ति में ब्रह्म, विष्णु और शिव में यागफल स्वीकारक की परीक्षा लेनी है। उन्हीं में से योग्य को चुनना है। भृगु को अपना निर्णय कश्यप महर्षि को सुनाना है।

प्रथमतः भृगु सत्यलोक पहुँचे। वहाँ ऋषियों की सभा में ब्रह्म थे। उनके सामने साष्टांग प्रणाम किया। सामने का एक आसन ग्रहण कर बैठ गये। भृगु का व्यवहार ब्रह्म को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने भृगु पर ध्यान नहीं दिया। कुशल मंगल पूछा नहीं। भृगु के वहाँ रहने की ओर भी दृष्टि नहीं दी। भृगु ने ब्रह्म से कुछ अच्छा व्यवहार चाहा था। उन्होंने सोचा कि ब्रह्म रजो गुण से चालित हैं। रजो गुण से युक्त व्यक्ति क्रोध, असंतुलन और अन्य इसी प्रकार के गुणों से युक्त रहते हैं। भृगु का तुरंत निर्णय था कि ब्रह्म हविस आदि को प्राप्त करने योग्य नहीं है। उनमें ऋषि ने दिव्यता की कमी देखी। बस भृगु ने ब्रह्म को शाप भी दे

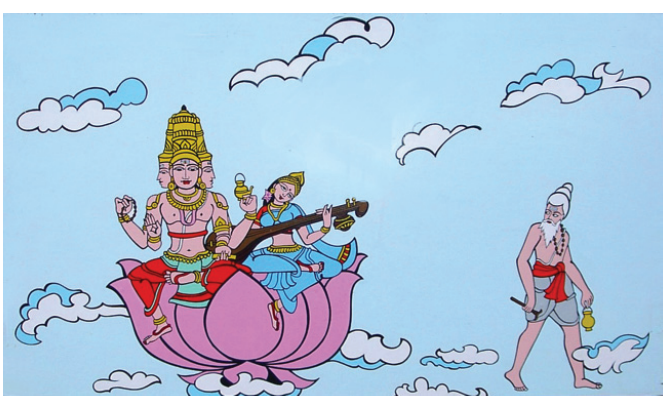

दिया कि पृथ्वी पर उनके मंदिर नहीं होंगे। उनकी पूजाएँ नहीं होंगी।

शीघ्रगति से ब्रह्म की सभा से निकलकर शिव जी की परीक्षा के लिए कैलाश की ओर चल पडे। जब भृगु कैलाश पहुँचे तब शिव जी पार्वती के साथ विलास में डूबे थे। भृगु कैलाश पहुँचकर दिव्य दंपति के सामने खडे हो गये। पार्वती लज्ञा से दूर हटीं और शिव क्रुद्ध हो गये। शिव की आँखें लाल-लाल हो गयीं। भृगु ने सोचा कि शिव जी भी हविस पाने की योग्यता नहीं रखते हैं। ये तमोगुण युक्त देव हैं। मुक्ति प्रदान करने की योग्यता इनमें नहीं है। तमोगुण वालों में अंधकार,

जडता, नासमझी, आदि गुण प्रचुर मात्रा में रहते हैं। भृगु ने सोचा कि शिव जी को भी शाप देना है। बस, उनका शिव जी के लिए शाप था कि उनकी विग्रह पूजा नहीं होगी। शरीर की आकृति में शिव जी की पूजा नहीं होगी। उनके लिंग रूप में ही पूजा होगी। ऐसा कहकर वे वैकुंठ की ओर चले।

बस भृगु वैकुंठ की ओर चले। उस समय विष्णु भगवान श्री महालक्ष्मी के साथ आदिशेष पर (शेष तल्प पर) शयनित थे। भृगु की ओर ध्यान नहीं दिया। भृगु ने क्रोध में आकर उनके वक्षःस्थल पर पदाघात किया। विष्णु का वक्षःस्थल श्री महालक्ष्मी का वास स्थान था। विष्णु चौंक पडे। महर्षि को नमस्कार किया। अर्घ्य

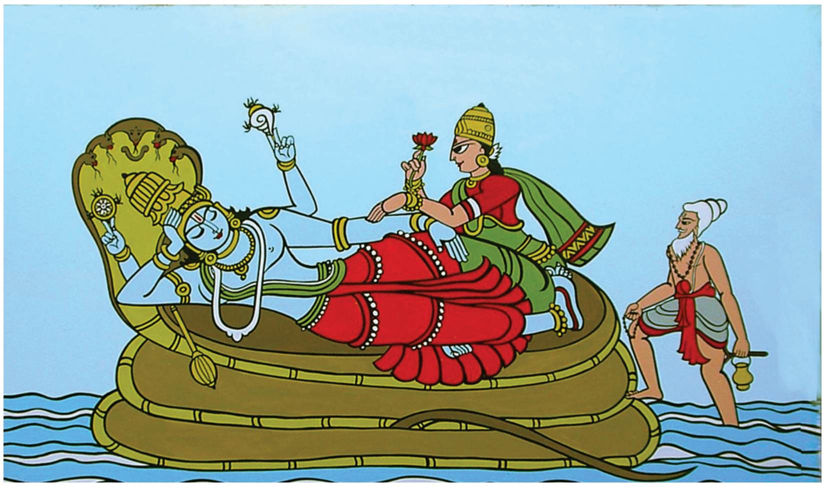

दिया। पाद्य दिया। उनके सामने बैठे भी। भृगु के पैर को उठाकर अपनी जंघा पर रख लिया। हाथों से पैर को दबाया। यह सब ऐसा किया कि मानो भृगु के पैर को कष्ट हो गया और अपने हाथों से दबाने से उन्हें शांति और उपशांति दोनों मिलेंगी। लेकिन वास्तव में भृगु के पद तल में शोभित एक आँख को दबोचना ही विष्णु भगवान का लक्ष्य था। उस आँख के कारण ही भृग में अहं का विस्तार था। विष्णु की इस लीला से भृगु का अहं दूर हो गया। इतना करने के बाद भगवान ने भृगु से क्षमा माँगी और कहा कि उनका वैकुंठ में आना बहुत ही अच्छा था। पर उन्हें इसकी सूचना नहीं दी गयी थी। पूर्व सूचना रही होती तो उनके सत्कार का रूप अलग ही हुआ होता। वे नहीं जानते थे कि महर्षि उनसे मिलने आ रहे हैं। इसीलिए वे शांत होकर शयनित थे। इसी कारण वे कुछ नहीं कर पाये। ऋषि ने उन्हें दण्ड दिया। इस संबन्ध में भगवान का कहना था कि यह दण्ड उनको मिलना ही चाहिए। वास्तव में एक बात तो सत्य है कि उनका वक्षःस्थल कठोर है। उससे टकराकर

ऋषि को अत्यंत कष्ट सहना पड़ा होगा। इसके बाद विष्णु ने भृगु का पैर धोया। उस पानी से अपने को प्रोक्षित भी किया।

विष्णु भगवान के व्यवहार से भृगु अत्यंत प्रसन्न हुए। उनके नम्र वचनों से उनको आनंद मिला। उनके आदर-सत्कार से ऋषि का मन भर गया तथा स्वयं अपने व्यवहार से लज्जित हो गये। भगवान की आँखों से आँखें मिलाकर देख नहीं पाये। धीरे-धीरे संभलकर ऋषि ने विष्णु भगवान से कहा- ''भगवान! मैं आपकी महानता से हतप्रभ हूँ। आपकी गरिमा का और महत्ता का वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकता हूँ। यह मेरी सीमा के बाहर ही ठहरता है। आप ही सर्वोत्तम देव हैं।'' इसके बाद भगवान से आज्ञा लेकर ऋषि लौटे।

भृगु महर्षि सीधे गंगा तट पर पहुँचे। कश्यप और अन्य मुनि गण यज्ञरत थे। भृगु ने अपनी परीक्षाओं का सविवरण समाचार उनको दिया। ब्रह्म के रजोगुण और शिव के तमोगुण युक्त होने की बात कही। विष्णु को सत्त्वगुण युक्त और यज्ञ फल प्राप्त करने योग्य देव भी घोषित किया। मोक्ष प्रदान करने की क्षमता से युक्त नारायण को ही उपयुक्त देवता के रूप में पाने के अपने निर्णय को सुना दिया। सब ने स्वीकार किया कि यज्ञ का फल भगवान विष्णु को ही समर्पित किया जाय।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - 9403727927

आरेन क्क्रिनु निहर् शोल्लिल्, मायन न्नैवर् दैव
त्तेरिनिल् शेप्पिय गीतैयिन्, शेम्मै प्पोरुळ तेरिय
प्पारिनिल् शोन्न विरामानुजनै प्पणियुम् नल्लोर्
शीरिनिल् शेन्नु पणिन्ददु, एन्नावियुम् चिन्तैयुमे ॥६८॥

आश्चर्यचेष्टितनिधिना भगवता वासुदेवेन पुरा पाण्डवानां दिव्यं रथमधितस्थुषाऽनुगृहीताया गीताया अर्थयाथात्म्यमिह गीताभाष्यमुखेन प्रकाशितवन्तं श्रीरामानुजं भेजुषां सतां गुणेषु ममात्मा मनश्च गाढमवगाढम्। अद्य मया सदृशः को हि नामास्ति धन्यः॥

पूर्वकाल में पांडवों के दिव्य रथ पर (अर्जुन के सारथि के रूप में) विराजमान अत्याश्चर्यमय दिव्यचेष्ठितवाले श्रीकृष्णभगवान से अनुगृहीत भगवद्गीता के असली अर्थों को सबको सरलता से समझाते हुए गीताभाष्य रचनेवाले श्री रामानुज स्वामीजी का भजन करनेवाले श्रेष्ठ पुरुषों के कल्याणगुणों में मेरी आत्मा और मन मग्न हो गये। अब मेरे सदृश धन्य दूसरा कौन होगा?

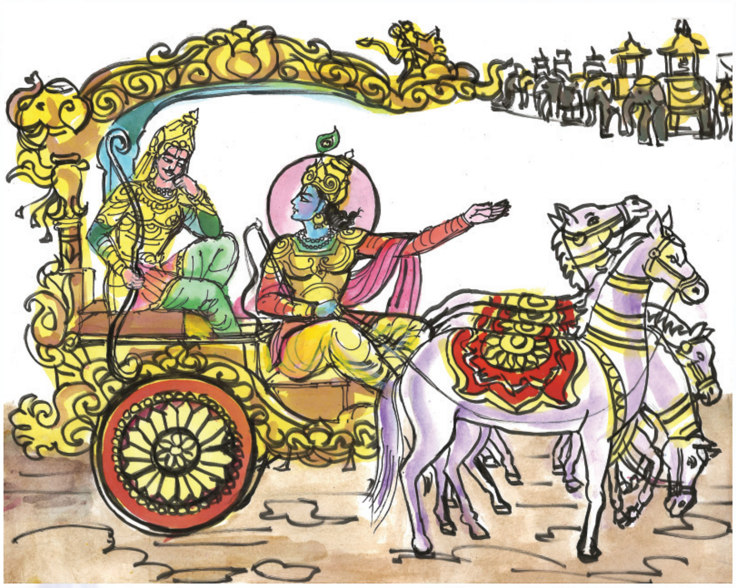

(विवरण - श्री रामानुज-भाष्य पढकर ही हम सरलता से भगवद्गीता के सच्चे अर्थ जान सकते हैं।)

श्री भगवद्गीता के सच्चे अर्थ को सरलता से जानने के लिये श्री रामानुज भाष्य पढ़ना चाहिये।

क्रमशः

(मिथ की महिला चरित)

सती सावित्री

- डॉ.के.एम.भवानी,
मोबाइल - 9949380246.

सती सावित्री यह नाम भारतीय स्त्रियों में एक अटूट विश्वास और हिम्मत जागृत करनेवाला नाम है। सावित्री एक ऐसी नारी शक्ति है जिसने असंभव समझा जानेवाली बातों को संभव करके दिखाया है। सावित्री ने यह साबित किया कि पतिव्रता स्त्री केलिए कोई असाध्य काम नहीं होता है। सृष्टि में जो भी प्राणी मर जाने के बाद फिर से जिंदा होना असंभव है। ऐसे ही कोई भी मानव सशरीर यमराज को देख सकना, उसके पीछे-पीछे नरक लोक तक पहुँचना अनुमान भी न कर सकने वाली बातें हैं। लेकिन अपने सतीत्व और अद्वितीय साहस, हठीपन से सावित्री ने इन सारी बातों को सच करके दिखाया है।

सावित्री की कहानी का उल्लेख हमें महाभारत के अरण्यपर्व में मिलता है। पांडव द्रौपदी सहित बारह वर्ष वनवास करते समय उनका मिलन कई ऋषि-मुनियों के साथ होता है। तब युधिष्ठिर के पूछने पर वे सब पांडवों को धर्म से संबंधित कई बातें बताते हैं। इसी सिलसिले में सावित्री की कहानी मार्कंडेय महर्षि के द्वारा युधिष्ठिर को बतायी गयी है।

मद्र देश के महाराज अश्वपति को कई वर्षों तक संतान की प्राप्ति नहीं हुई। इसलिए राजा अश्वपति ने ऋषि-मुनियों के सुझाव के अनुसार करीब अठारह साल तक लगन और श्रद्धा से माँ सावित्री की पूजा की। उसकी अनन्य भक्ति और विश्वास से माता प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष हो जाती है और उसे संतान पाने का वर देती है। उसी के अनुरूप के कुछ ही समय के बाद महाराज अश्वपति को एक पुत्री पैदा होती है। माता सावित्री का वर प्रसाद होने के कारण राजा ने अपनी पुत्री का नाम सावित्री रखा।

सावित्री बडी हो जाती है और शादी के योग्य बन जाती है। एक दिन देवर्षि नारद राजा अश्वपति के यहाँ पहुँचता है। उस समय उसकी नजर वहीं पर उपस्थित सावित्री पर पड़ती है। तब वह सावित्री की शादी का प्रस्ताव करता है। तो सावित्री कहती है कि वह महाराज द्युमत्सेन का पुत्र सत्यवान से शादी करना चाहती है। उसने उसके गुण-गणों को सुनकर अपने मन में उसे पति बना लिया है। तब राजा अश्वपति से नारद जी इस प्रकार कहते है। महाराज द्युमत्सेन का पुत्र सत्यवान सर्वगुण संपन्न है। इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन अब द्युमत्सेन अपने शत्रुओं से पराजित होकर, राज्य खोकर, जंगलों में वनवास कर रहा है। इतना ही नहीं, अब वह अंधा भी हो गया है। इसलिए युवराज सत्यवान भी वन में अपने माता-पिता की देखभाल करते हुए दिन गुजार रहा है। लेकिन इससे भी मुख्य बात यह है कि वह अल्पायु है।

शादी के ठीक एक साल बाद उसकी मौत निश्चित है। यह सुनकर अश्वपति सोच में पड़ने पर भी सावित्री अपना निर्णय बदलने केलिए तैयार नहीं होती है। वह कहती है कि एक बार किसी को पति मानने के बाद फिर बदलना सती स्त्री का धर्म नहीं है। वह मानसिक जारकर्म के समान है। चाहे सत्यवान अल्पायु हो या दीर्घायु, उसे पति मान चुकने के कारण वह उसीसे शादी करेगी। वह पिता और ऋषि नारद से अपना दृढ़ निश्चय प्रकट करती है कि वह अपने सतीत्व से अपने पति को मृत्यु से बचा सकेगी। अपनी पुत्री के अटल निर्णय को सुनकर राजा

अश्वपति सावित्री की इच्छा के अनुसार ही सत्यवान से उसकी शादी करने को तैयार हो जाता है। अश्वपति राजा द्युमत्सेन के पास जाकर शादी की बात करके उसे भी शादी के लिए मनाता है और फिर सावित्री सत्यवान की शादी कर देता है।

सावित्री शादी हो जाने के बाद सत्यवान के साथ वन में रहने लगती है। वहाँ सावित्री हमेशा सास-ससुर और पति की सेवा में लगी रहती है। लेकिन उसके कान में हमेशा देवर्षि नारद की बातें ही गूँजती रहती हैं। जब एक साल पूरे होने में तीन ही दिन बाकी रहते हैं, तब सावित्री सास-ससुर और पति के आशीर्वाद लेकर निराहार से व्रत करना शुरू कर देती है। तीसरा दिन सुबह जब सत्यवान लकड़ी लाने के लिए वन जाने को तैयार हो जाता है। तब सावित्री भी पति के साथ वन जाने को तैयार हो जाती है। परिवार में सब पहले मना करते हैं कि वह तीन दिन से उपवास रही थी।

बहुत कमजोर लग रही थी। लेकिन सावित्री सबको मनाकर ससुर के आशीर्वाद से पति के साथ चलती है। शादी के बाद यह सावित्री की पहली इच्छा होने के कारण सत्यवान को भी मानना पड़ता है। सत्यवान वन में सावित्री को जंगल की विशेषताएँ बताते हुए चलता है। तो सावित्री हमेशा उसके ऊपर ही नजर रखकर उसे देखती ही रहती है। जब सत्यवान लकड़ी काटने लगता है, तब अचानक उसके सर में भयंकर दर्द होने लगता है।

वह उस दर्द को सहन नहीं कर पाता है। सावित्री की गोद में आकर कुछ समय के लिए लेट जाना चाहता है। सावित्री पति के शरीर में आनेवाली तब्दीलियों का निरीक्षण करने लगती है। लेकिन उसका मन नहीं काँपता है। उसे अपने संकल्प पर अटूट विश्वास है। कुछ समय के बाद सावित्री को एक साँड पर बैठे एक अत्यंत भयंकर मगर तेजोवान का दर्शन होता है। सावित्री के पूछने पर वह अपना परिचय देता है कि वह यमधर्मराज है। पवित्रात्मा होने के कारण वह अपने अनुचरों को न भेजकर सत्यवान को लेने खुद आया है।

वह यह भी कहता है कि वह किसी को नहीं दिखता है लेकिन सावित्री अपने सतीत्व के कारण उसे देख सकी। ऐसा कहने के बाद यमधर्मराज सत्यवान के शरीर से प्राण निकालकर ले जाने लगता है तब सावित्री उसे रोकने की कोशिश करती है। लेकिन यम धर्मराज उसे मानव लोक के मृत्यु-धर्म को समझा कर सत्यवान के प्राण ले जाने लगता है। सावित्री भी उसका पीछा-पीछा करने लगती है। यमधर्मराज उसे समझाता है कि ऐसा करने से कोई फायदा नही है। तब सावित्री कहती है कि वह यमधर्मराज से उसके नियम तोड़ने को नहीं कह रही है। यम के पास उसका पति है। पति जहाँ भी हो, उसके साथ रहना ही पत्नी का धर्म है।

इसलिए वह अपने पत्नी-धर्म का पालन कर रही है। तो यम कहता है कि अब तक कोई ऐसा मानव नहीं है, जो सशरीर यमलोक पहुँच सके। लेकिन सावित्री उसकी बात पर ध्यान न देकर उसके पीछे-पीछे चलती ही रहती है। यमधर्मराज कितने

समझाने पर भी वह नहीं रुकती है। वह कहती है कि यमधर्मराज जैसे महात्मा और सज्जन का दर्शन करने के बाद कुछ भी लाभ पाए बिना खाली हाथ वापस जाना धर्म नहीं है। सज्जन दर्शन हमेशा लाभ पहुँचाने वाला होता है। सावित्री के धर्म शास्त्र ज्ञान को सुनकर उसके ज्ञान से बहुत-बहुत प्रसन्न होकर यमधर्मराज उसे पति के प्राणों के बिना कोई वर उसे माँगने को कहता है।

तो सावित्री पहले अपने ससुर के अंधेपन को दूर करके उसे वापस राज्य दिलाने का वर माँगती है। सावित्री के धर्म को देखकर यमधर्मराज बहुत प्रसन्न होकर उसे वह वर दे देता है। कुछ दूर जाने के बाद वह फिर सावित्री को अपने पीछे पाकर फिर उसे पति के प्राण के अलावा कोई दूसरा वर माँगने को कहता है। सावित्री अपने माता-पिता के लिए पुत्र संतान माँगती हैं। तो यमधर्मराज खुश होकर उसके माता-पिता को सौ पुत्र पैदा होने का वर देता है और आगे बढ़ जाता है। सावित्री फिर उसके पीछे-पीछे चलने लगती है। तो यमधर्मराज समझ जाते है कि यह औरत अपने पातिव्रत्य से सशरीर यमलोक भी पहुँच सकती है।

इसलिए उसे और एक वर देना चाहता है। तो सावित्री उस वर के रूप में अप्रत्यक्ष रूप से अपने पति के प्राण माँगती है। यमधर्मराज उसकी समझदारी, सूझ-बूझ और सतीत्व से प्रसन्न होकर उसे सत्यवान का प्राण वापस दे देता है और भी कहता है कि सत्यवान दीर्घायु बनकर चार सौ साल जिंदा रहेगा। सावित्री से वह सौ पुत्रों को पाकर खुशी से राज्य पालन करेगा। वर प्रभाव से सत्यवान जिंदा होकर ऐसा उठता है कि जैसे नींद से कोई जाग गया हो। सावित्री उसे कुछ भी नही कहती है। तब तक अंधेरा फैलने के कारण सावित्री-सत्यवान अपन कुटीर पहुँचते है और वहाँ राजा द्युमत्सेन का अंधेपन दूर होना देखकर बहुत खुश हो जाते हैं। यमधर्मराज के वर के अनुसार राजा द्युमत्सेन अपना खोया हुआ राज्य भी वापस प्राप्त करता है।

इतनी सारी खुशियाँ अचानक प्राप्त होने का कारण द्युमत्सेन के पूछने पर सावित्री सत्य बताती है। तो द्युमत्सेन बहू की सराहना करते हुए आशीष देता है कि मानव लोक में उसका नाम अमर रह जाएगा।

वट सावित्री व्रत :

सावित्री और सत्यवान की कहानी की याद में भारतीय महिलाएँ वट सावित्री व्रत करती हैं। पति के कुशल क्षेम की कामना करती हुई उपवास रहकर पूजा करती हैं। यह व्रत जेष्ठ मास की शुक्ल त्रयोदशी से लेकर पूर्णिमा तक (तीन दिन) करती हैं। पूर्णिमा के दिन वट वृक्ष की पूजा करके, उसके नीचे माता सावित्री के चित्र रखकर पूजा करती हैं। बगल में सावित्री और सत्यवान को भी पूजा करती हैं और सुहागिनी नारियों को फूल, फल व्रस्त्र दान भी करती हैं। अंत में यह श्लोक पढ़ती हैं।

अवैधव्यं च सौभाग्यं देहित्वं मम सुव्रते।
पुत्रान पौत्रांश्चच सौख्यं च गृहाणार्घ्य नमोस्तुते।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - 9449517879

118

श्रीमते रामानुजाय नमः

याने जिसने श्रीराम नाम का उच्चारण किया उससे कुछ भी कर्म काण्ड बाकी नहीं रहा। श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे मुमुक्षु महात्माओं! शरणागतों को चाहिए कि हरेक स्वरूपानुरूप कर्मों को पाप छुड़ाना और पुण्य मिलाना इस भावना से न करके भगवान की आज्ञा कैंकर्य मानकर किया करें। उपायान्तरी लोग पाप छुड़ाने और पुण्य सम्पादन की भावना से संक्रान्ति तथा ग्रहण में स्नान दानादि किया करते और शरणागत पाप छुड़ाना पुण्य सम्पादन करना इस भावना को हटाकर भगवान की आज्ञा पालन बुद्धि से किया करते हैं और सदा डरा करते हैं कि मन में पाप छुड़ाने और पुण्य सम्पादन करने की भावना न आजाय क्योंकि उपायान्तर भावना आई कि शरणागति टूटी। उसी प्रकार उपासक लोग भगवान की पुरियों में निवास मोक्ष का साधन मानकर किया करते हैं और शरणागत भगवान की निर्हेतुक कृपा को तो मोक्ष का साधन मानते हैं और पुरियों के निवास को फल स्वरूप मानते हैं क्योंकि यदि पुरियों के निवास को मोक्ष का साधन मानें तो शरणागति टूट जायेगी। उसी प्रकार गंगा, यमुना, सरयू, कावेरी आदिक स्वरूपानुरूप पुण्य नदियों में शरणागत पाप छुड़ाना और पुण्य सम्पदान करना इस भावना से नहीं स्नान करते हैं किन्तु भगवान की आज्ञा है कि स्नान करना चाहिए इस भावना से ही करते हैं।

इसी प्रकार ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक का धारण करना, तुलसी कमलाक्ष की माला पहना, बाडु मूल में भगवत् आयुधों का धारण करना, गुरु का श्रीपाद तीर्थ लेना, गुरु के त्रिविड़ी को मस्तक पर लेना, भगवान की सेवा पूजा करना, भगवान को स्नान कराना, भगवान का तिरुमंजन करना, भगवान का श्रृंगार करना, भगवान को हरेक प्रकार का भूषण धारण कराना, श्रृंगार को चन्दन-पुष्प चढ़ाना, उनके लिए बालभोग, राजभोग, उत्थापन भोग, शयन भोग, दुग्ध, दही, माखन, मिश्री, मलाई, फल, फूल, मेवा वगैरह का अर्पण करना, अत्तर लागू कराना, तुलसी-पुष्प से अर्चना करना श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, श्री वामन द्वादशी, नृसिंह चतुर्दशी इन जयंतियों में व्रत करना तथा महोत्सव मनाना, एकादशी व्रत करना

गुरु के जन्म तिथि तथा अन्तिम तिथि में महोत्सव मनाना, दिव्य देशों की यात्रा करना, भगवान के तीर्थों में, मन्दिरों में, दर्शनार्थ जाना, भगवान की परिक्रमा करना, भगवान का चरणामृत, तुलसी, बाल-भोग आदि को ग्रहण करना, भगवान की स्तुति करना, भगवान के स्तोत्रों का पाठ करना, भगवान की आरती उतारना, श्रीहरि के लिये मन्दिर बनाना, उसमें अनेक प्रकार से जीविका का प्रबन्ध करना, भगवान के पुष्प-तुलसी माला आदि के लिये पुष्प वाटिका का इन्तजाम करना, भगवान की, भागवतों की तथा श्री गुरु महाराज की किसी प्रकार की भी सेवा करना, भगवच्चरित्रों का श्रवण करना, भगवान के श्रीनामों का जप कीर्तन करना, श्रीहरि का स्मरण-ध्यान करना, श्री सीतारामजी को दण्डवत साष्टांग प्रणाम करना इत्यादि सभी बातों को भगवान श्रीपति के शरणागत महात्मा लोग फलस्वरूप ही मानकर किया करते हैं और उपासक लोग पाप छूटना और पुण्य सम्पादन होना इस भावना से करते हैं। शरणागत लोगों को तो स्वरूपानुरूप किसी धर्म कर्म के करते समय पाप छूटना और पुण्य मिलना ऐसी भावना मन से भी करना महापातक स्वरूप है। शरणागति प्रतिपादन करने वाले शास्त्रों में यहाँ तक लिखा है कि भगवान की शरणागति के सिवा याने भगवान की निर्हेतुक कृपा के अतिरिक्त यदि दूसरे उपाय में शरणागत मन से क्षण मात्र भी प्रवृत्ति करे तो उसकी शरणागति टूट जाती है। जैसे कि :-

''उपायापाय संयोगे निष्ठया हीयतेऽनया''

इसका वही अर्थ है जो कि पहले कह चुके हैं। शरणागत को तो यहाँ तक शास्त्र कहता है कि शास्त्र के विरुद्ध आचरण में तथा भगवान की निर्हेतुक कृपा के सिवा दूसरे उपायों में मन से भी यदि प्रवृत्ति होगी तो उसकी शरणागति टूट जायेगी।

''उपाय संप्लवे भूयः प्रायश्चित्तं समाचरेत्''

पुनः शरणागति को ठिकाने लाने के लिए शरणागतों के लिए शरणागति शास्त्रों में कहा हुआ जो प्रायश्चित है उसको तुरन्त ही कर लेना चाहिए। इतर शास्त्र विहित प्रायश्चित तो

शरणागतों के लिये मना होने के कारण कर नहीं सकते। क्योंकि प्रपन्न पारिजात में आदेश है कि :-

''चान्द्रायणादिकं कर्म न तु कुर्यात् कदाचन''

याने प्रायश्चित रूप में कहे गये जो कृच्छ चान्द्रायणादिक व्रत हैं इन्हें शरणागत कभी न करें। शरणागतों के लिये तो फिर भगवान की शरणागति कर लेना यही प्रायश्चित है। जैसे कि :-

''प्रायश्चित्तिरियं तेषां यत्पुनः शरणं व्रजेत्''

फिर भगवान की शरणागति कर लेना। शरणागतों के लिए यही प्रायश्चित है शरणागतों को बहुत सम्हल कर रहना चाहिए। शास्त्र से विरुद्ध आचरण में तथा भगवान की निर्हेतुक कृपा के सिवा दूसरे उपायों में ज्ञानपूर्वक तो कभी प्रवृत्ति करे नहीं और यदि भूलकर प्रमाद से कभी मानसिक प्रवृत्ति दीख पड़े तो उसी वक्त भगवान का नाम लेकर एक लम्बी साष्टांग करले और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे कि ''हे शरणागत वत्सल! आपके श्रीचरणों के शरण हो रहा हूँ इस हमारे अपराध को क्षमा करिये। फिर

ऐसा अपराध कभी न होगा।'' शरणागति शास्त्रों का कहना है कि इस प्रकार के करने से टूटी हुई शरणागति फिर ठिकाने आ जाती है।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे मुमुक्षु महात्माओं! जैसे शरणागति उपायान्तरों का लेश नहीं सह सकती उसी प्रकार देवतान्तर का सम्बन्ध भी नहीं सह सकती है। क्योंकि मुमुक्षुओं के लिये शास्त्रों का सख्त आदेश है कि :-

''मुमुक्षवो घोररुपान् हित्वा भूतपती नथ।
नारायण कलाःशान्ता भजन्ति ह्यनसूयवः।।''

इसका यह भाव भया कि मुमुक्षु महात्मा लोग घोर रूप वाले पितृपति, भूतपति, प्रजापति जो ब्रह्म शंकरादिक देव हैं उनको छोड़कर श्रीनारायण भगवान के शान्त कला जो श्रीराम कृष्णादिक अवतार हैं उन्हीं को भजते हैं। मोक्षदाता अपने इष्टदेव को भजते हैं और दूसरे की निन्दा भी नहीं करते हैं। इस प्रकार मुमुक्षुओं के लिए शास्त्रों की आज्ञा है कि सिवाय श्रीपति के दूसरे देवों का भजन पूजन नमस्कार आदि को न करें। भरद्वाज संहिता में भरद्वाज मुनि ने आचार्य के द्वारा शरणागत शिष्य को उपदेश दिलाया है कि :-

''यजस्वनित्यमात्मेशं मानंसी रन्यदेवताः।
लक्ष्यस्व लक्षणै भर्तु र्मा लक्षिष्ठान्य लक्षणैः।।''

हे श्रीपति के शरणागत महात्माओं! सदा अपने इष्टदेव प्यारे परमात्मा का ही पूजन किया करो, दूसरे देवताओं का नमस्कार तक भी न करो। अपने गुरुओं के आचार के अनुगुण प्यारे परमात्मा के आयुधों से ही अंकित होवो। देवतान्तरों के चिह्नों से भूल करके भी अंकित नहीं होना और भी श्री जी के प्रति भगवान अपने शरणागतों की सत्ता इस श्लोक में दिन चर्या वर्णन किये हैं। आज्ञा किये हैं कि :-

''नान्यं तु पूजयेद्देवं न नमेन्न स्मरेन्नच।
न पश्येन्न च गायेच्च न च निन्देत् कदाचन।।''

इसका यह भाव भया कि श्रीपति के शरणागतों को चाहिये कि श्री भगवान के सिवा दूसरे देवों का दर्शन पूजन ध्यान नमस्कार आदिक न किया करें तथा दूसरे देव की निन्दा भी न करें। और भी भरद्वाज मुनि का वचन है कि :-

''विष्णोः सेवेत तीर्थानि तथैवायतनानिच।''

अर्थात् श्री भगवान के शरणागतों को चाहिये कि श्री विष्णु भगवान के ही तीर्थों में जावे जिस मन्दिर में सिर्फ श्री जी और श्री भगवान और उनके नित्य पार्षद श्री लक्ष्मणजी, श्री बलरामजी, श्री गरुड़जी, श्री हनुमानजी आदि विराजे हों उसी मन्दिर में दर्शन को जाना चाहिए। जिस मन्दिर में श्री भगवान और उनके पूर्वोक्त पार्षदगण तथा श्री आचार्य प्रतिमा के सिवा दूसरे देवों की भी स्थापना भई हो या इतर देवों की कैसी भी मूर्ति रखी हो उसमें नहीं जाना चाहिए न वहाँ का कुछ भी ग्रहण करना चाहिए। इसके प्रणाम में निम्नलिखित श्लोक है।

''गृहेयस्यान्यदेवार्चा व्यक्तो न च जनार्दनः।
न तस्य किञ्चिदश्नीया दीप वेदान्त वेदिनः।।''

क्रमशः

उन में एक काशी राजवंश दूसरा वैदेही राजवंश। इन दोनों वंशों में वीर ही जन्म लेते हैं। यह कब से आरंभ हुआ पता लगाने पर यह उपनिषदों के समय से आरंभ हुआ। उपनिषद काल में भी वीर कौन है पूछे जाने पर काशी राजा तथा विदेह राजा कहा जाता था। ''बृहदारण्यकोपनिषद'' में एक स्थान पर ''यथा काश्योवा वैदेहोवा उग्रम धनुर्धित्यम कृत्वा'' कहा गया। इसीलिए ऐसे वीरों के वंश में जन्में काशी राजा उनके पक्ष में जाना कहाँ तक उचित। मेरी ओर रह सकते हैं न कि इस तरह की ईर्ष्या। यहाँ ''काशीराजः'' है न वह शब्द स्वारस्यम एक और तरह से देख रहे हैं। ''बृहदारण्यकोपनिषद'' में भी ''काशीराजः'' कहा गया यहाँ भी ''काशीराजः'' कहा गया। इन दोनों में कोई संबंध है क्या? जानने पर हाँ अवश्य है। उन उपनिषदों का सार ही श्रीमद्भगवद्गीता है। इस विषय की सूचना देने हेतु ही ''काशीराजस्य'' कहा गया, ऐसा हम समझ सकते हैं। ''काशीराजश्चवीर्यवान'' वैसे ही ''पुरुजित'' कुंतिभोजः नाम वास्तव में कुंती देवी के पिता के नाम हैं। कुंती देवी का पालन पोषण करने वाला पिता। उस वंश के राजाओं के नाम कुंतीभोजा ही हैं। इसका अर्थ पांडवों के समकालीन में रहनेवाला एक योध्दा। वैसे ही ''शैब्याश्च'' शिबि देश के राजा ''नर्रपुंगवः'' एक अच्छे योध्दा हैं। योध्दाओं के नाम गिने जाए तो ''शैब्याश्च'' शिबि देश के राजा भी उन्हीं में एक हैं। ऐसे राजा भी पांडवों की ओर चले गये। इस बात की ईर्ष्या प्रकट कर रहा है। निम्नलिखित श्लोक में वहाँ कुछ और योद्धाओं के नाम लिया जा रहा है।

''यथामन्युश्च विक्रांतः उत्तमौजाश्च वीर्यवान।
व्याभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।।''

युथामन्यु नामक योद्धा दृष्टद्युम्न के रिश्ते में भाई लगते हैं। इन्हें ''विक्रांतः'' कहा जा रहा है अर्थात् अच्छे पराक्रमी। वैसे ही एक और योद्धा ''उत्तमोजाः''। युथामन्यु के छोटे भाई ये भी पराक्रमी हैं। उत्तमौजाश्चा वीर्यवान बहुत ही पराक्रमी। उसी तरह सौभद्रः सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु उम्र केवल सोलह वर्ष। अभी विद्याभ्यास भी पूर्ण न करने वाला। पूर्ण रूप से व्यूह के भीतर जाने की जानकारी रखता है किंतु व्यूह से बाहर आने की कला से अनभिज्ञ। शस्त्रास्त्र एवं पूर्ण उपदेश कोई भी सही नहीं कर सकते। फिर भी महायोद्धा की संज्ञा उन्हें दे दी गई। सोलह वर्ष के बालक का हृदय बलशाली है। हमारे पिताओं के साथ वे अन्याय करेंगे? मैं अकेला ही उससे प्रतिशोध लूंगा ऐसी वीरोचित बातें कर रहा है। ऐसा सुभद्रः सुभद्रा कुमार के

विषय में अच्छी जानकारी आई है। ऐसे महायोद्धा से आमने-सामने होने पर उसे धोखे से मारने का व्यूह पहले से ही रच लिया गया था। इस सुभद्रा कुमार अभिमन्यु को सामने से मारने की शक्ति किसी में नहीं, ऐसा योद्धा है वह। ऐसे महा योद्धा द्रौपदेश्चणा द्रौपदी के पाँच पुत्र हमें पता है। एक-एक पाण्डव से एक-एक पुत्र। धर्मराज द्वारा प्रतिविंद्य नामक पुत्र, भीमसेन द्वारा श्रुतसोम, अर्जुन द्वारा श्रुतकीर्ति, नकुल द्वारा शतानिक, सहदेव द्वारा श्रुतसेन नामक पुत्र जन्में। ये पाँच पुत्र महायोद्धा हैं तभी से इनका प्रचार हो चुका था। वे युद्ध के लिए तैयार खड़े थे। इन सभी को बारी-बारी से वह याद कर रहा है। दो बातें विचारणीय हैं कि वह अपने सगे-संबंधियों में किसी को भी रिश्तों में बाँधते संबोधित किया?

अर्थात मेरा भाई, मेरे भैया, मेरे जीजाजी संबंधित किया क्या, नहीं। उनके माता या पिता का नाम कह रहा है क्या? सौभद्रः कह कर सुभद्रा का नाम ले रहा है। द्रौपदेयाश्च कह कर द्रौपदी का नाम ले रहा है बस इतना ही। पर मेरे भाईयों की संतानें हैं ऐसा कह रहा है क्या नहीं? क्यों कि उसमें मानवता ही नही है, मानवीय संबंधों का मूल्य ही वह नही जानता। केवल इस युद्ध में मैं विजयी होऊँ। राजा बनूँ इतनी ही आशा है। ऐसे अत्याशावादियों की कैसी गति होगी कहने के लिए प्रत्यक्ष उदाहरण दुर्योधन ही है।

मानव संबंधों का अनादर, मनुष्यों का अनादर कर केवल भौतिक वस्तुओं, राज्यों का, अधिकारियों का आदर करने वाले दुर्योधन ही की कैसी गति प्राप्त करते हैं कहने के लिए ये दो बातें ही उदाहरण हैं - सर्वएम महारथाः कह रहे हैं अर्थात् सभी महारथी हैं रथी, अर्धरथी, महारथी, अतिरथी इस तरह चार वर्ग होते हैं चार पंक्तियाँ होती हैं। चार पंक्तियों में रहनेवालों को चार तरह से विभाजित कर देखना चाहिये। किंतु सर्वएवमहारथाः कह कर संबोधित कर रहा है। तब रथी कौन, महारथी कौन, अतिरथी कौन ये बातें हम आगे देखेंगे, जानेंगे।

क्रमशः

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

मूर्ख-पद्धति

चेरुकु तोपि लेमि चेत्त ना बड्डुनट्लु
परग गुणमु लेनि पंडितुंडु
दूरु वडुनु गादे दोष मटुंडग
विश्वदाभिरामा विनुर वेमा ।।९।।

गुणहीन पंडित प्रजा के परिहास एवं निंदा का भाजन बन जाता है। उसकी दुर्दशा रसहीन गन्ने की सी है, जिसे फालतू घास की उपाधि देकर अनादृत किया जाता है। ऐसे नीरस गन्ने को एक बार चख कर ही लोग दूर फेंक देते हैं। गुणहीन पंडित का भी परिचय एक बार पाकर लोग उससे कतरा कर दूर चले जाते हैं।

जून २०२२

०५-१३ तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१०-१४ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव
१०-१८ अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१२-१४ तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक
२०-२२ तिरुचानूर श्री सुंदरराजस्वामीजी का अवतारोत्सव

विशाखा सागर तट पर विराजमान श्री महालक्ष्मी गोदादेवी सहित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर

आं.प्र., विशाखपट्टनम्, ऋषिकोंडा प्रांत में प्रकृति सौरभों के बीच में श्री महालक्ष्मी गोदादेवी सहित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर का निर्माण किया है। इस मंदिर के सामने श्री बेडि आंजनेय स्वामी मंदिर का भी निर्माण किया है।

इस मंदिर का महासंप्रोक्षण कार्यक्रम 2022, मार्च 18 से 23 तक संपन्न किया। इस मंदिर प्रारंभोत्सव के अंतर्गत कलशस्थापना, वैदिक होमम्, शुद्धोदक, महाकुंभाभिषेक, कल्याणोत्सव जैसे कार्यक्रमों को वैखानस आगम के अनुसार आयोजित किया। इस संदर्भ में विशाखा शारदा पीठम् स्वामीजी श्री स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी और श्री स्वात्मानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी पधार कर अपना अनुग्रह भाषण दिया।

इस कार्यक्रम में धर्मपत्नी सहित ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी और तिरुपति के संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्रीमति सदा भार्गवी, आई.ए.एस., व श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., ति.ति.दे. न्यास-मंडली के सदस्य एवं अन्य उच्च अधिकारियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के संबंधित चित्र अगले पृष्ठ में हैं।

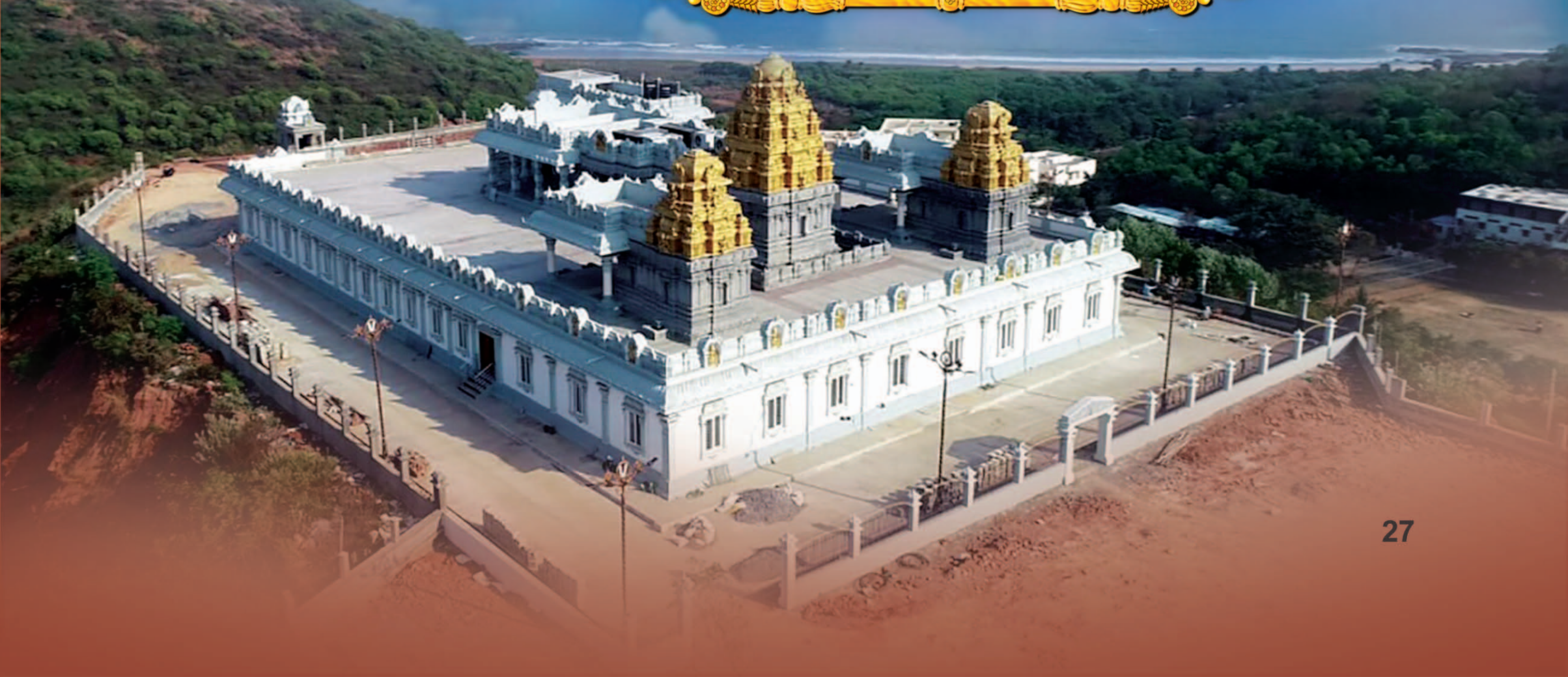

आं.प्र., विशाखपट्टनम् में स्थित श्री महालक्ष्मी गोदादेवी सहित

श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर का महासंप्रोक्षण के दृश्य।

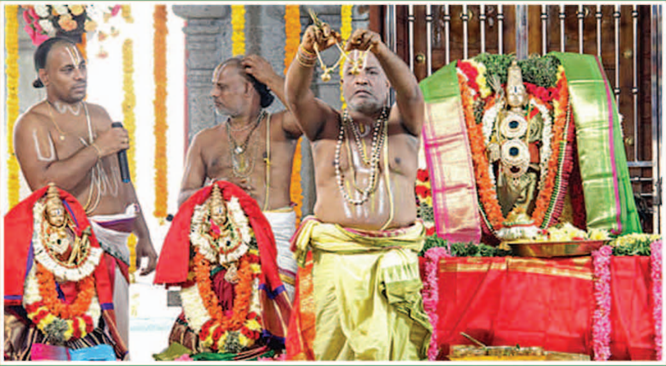

तिरुपति 'श्वेता भवन' में 'गोशाला आयोजकों और गो आधारित प्रकृति व्यावसायिक प्रशिक्षण' को वर्चुअल माध्यम से ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस., द्वारा प्रारंभ करने के दृश्य। इस संदर्भ में ति.ति.दे. तिरुपति के संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., और अन्य ति.ति.दे. उच्च अधिकारियों ने भाग लिया।

दि. 25-03-2022 को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी तिरुमल पी.ए.सी-I में आकस्मिक निरीक्षण एवं भक्तों की प्रतिक्रिया के दृश्य।

दि. 26-03-2022 को तिरुमल श्री बालाजी के दर्शनार्थ पधारे श्री अहोबिल मठ के 46वाँ जीयर श्रीश्रीश्री रंगनाथ यतींद्र महादेशिकन् स्वामीजी को ति.ति.दे. अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी जी, आई.डी.ई.एस., ने आलय सम्मानों द्वारा स्वागत करने के दृश्य।

दि. 28-03-2022 को श्री ताळ्ळपाका अन्नमाचार्य जी के 519वाँ पुण्य तिथि के अवसर पर तिरुपति, अलिपिरि में 'मेट्लोत्सव पूजा (अलिपिरि के सीढ़ियों की पूजा)' के संदर्भ में आयोजित संकीर्तनागोष्ठी के दृश्य। इस अवसर पर ति.ति.दे. तिरुपति जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., और अन्य ति.ति.दे. उच्च अधिकारी उपस्थित से।

पदोन्नति पर तबादला हुई ति.ति.दे. मुख्य सुरक्षा व चौकसी अधिकारी श्री गोपिनाथ जेट्टी जी, आई.पी.एस., को ति.ति.दे. अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी जी, आई.डी.ए.एस., ने श्रीहरि के चित्र-पट द्वारा सम्मानित करने के (06-04-2022) दृश्य।

दि. 06-04-2022 को तिरुमल श्री बालाजी मंदिर में ति.ति.दे. नूतन मुख्य सुरक्षा व चौकसी अधिकारी के पद का कार्यभार को स्वीकारते हुए श्री डी.नरसिंह किशोर जी, आई.पी.एस.।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया
मोबाइल - 9482365339

4) तिरुवेल्लरै (वेदगिरि, श्वेतगिरि)

श्रीरंगम से लग-भग 20 कि.मी. की दूरी पर है।

मूलमूर्ति - पुंडरीकाक्षन, पूर्वाभिमुख खडे होकर दर्शन देते हैं।

माताजी (तायार) - चेंपकवल्ली, पंकजवल्लि अलग मन्दिर में विराजमान हैं।

तीर्थ - मंदिर के आंगन में ही ''साल तीर्थ'' है।

विमान - विमलाकृति विमान।

प्रत्यक्ष - गरुड भगवान, शिबि, भूदेवी, मार्कंडेय आदि।

विशेष - 'उत्तरायण द्वार' उत्तरायण में एवं 'दक्षिणायणम द्वार' दक्षिणायण में (गर्भगृह में) दर्शन करने जाते हैं। मान्यता है कि श्रीदेवी, भूदेवी, सूर्य, चन्द्र, आदिशेष आदि यहाँ मानव रूप में निकट रहते हुए भगवान की सेवा करते

हैं। राजा शिबि चक्रवर्ति को श्वेत वराह के रूप में दर्शन दिये। चक्रत्ताल्वार एवं श्री रामानुज स्वामीजी की सन्निधियाँ हैं। 2 आल्वारों ने मंगलाशासन कुल 24 दिव्य पद्यों में किया है।

5) तिरु अनबिल

यह दिव्यदेश श्रीरंगम से 25 कि.मी. पर है।

मूलमूर्ति - भुजंगशयनम, पूर्वाभिमुख, वड़ीवलगियनम्बी।

उत्सव मूर्ति - सुन्दर राजन।

माताजी (तायार) - अलहिय वल्लि नाच्चियार।

तीर्थ - कोल्लीडम, मुन्द्रक पुष्करिणी।

विमान - तारक विमान।

प्रत्यक्ष - ब्रह्म, वाल्मीकि।

मंगलाशासन - एक आल्वार, एक दिव्य पद।

6) तिरुप्पेर नगर (कोइलडि, अप्पकुडत्तान)

अन्बिल से (कोल्लीडम पार नदी किनारे पर) पाँच कि.मी. की दूरी पर है। श्रीरंगम, तिरुच्चि से भी जा सकते हैं। ''कोइलडी'' नाम प्रसिद्ध है।

मूलमूर्ति - अप्पकुडत्तान, आपल रंगनाथन, पश्चिमाभिमुख, भुजंगशयन।

माताजी - इंद्रिरा देवी कमलवल्ली।

तीर्थ - इन्द्र तीर्थ, कोल्लीडम।

स्थलवृक्ष - विल्व।

विमान - इन्द्रविमान।

प्रत्यक्ष - उपमन्यु, पराशर यह मान्यता हैं कि नम्माल्वार शठकोप यहीं से मोक्ष को प्रस्थान किये। इसलिए नम्माल्वार ने आखिर में यहाँ का मंगलाशासन किया है। रोज शाम को गूडा पूप का निवेदन किया जाता है। हनुमान (आंजनेय) की सन्निधि एवं आल्वार मंडप है।

मंगलाशासन - 4 आल्वारों ने कुल 33 पदों से किया।

क्रमशः

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

गरुड के द्वारा श्री महालक्ष्मी को स्वामी की आज्ञा को सुनाना :

खगेंद्र गरुड ने वैकुंठ पहुँच कर रमा देवी को नमस्कार करके विनति करते हुए उन से कहा। “हे माई! श्रीहरि महोग्र रूप धारण करके दानव हिरण्याक्ष को मारा है। रसातल में पानी में डूबनेवाली धरती का उद्धार किया है। धरती को फिर से यथास्थान पर खडा किया। वहीं पर बसने का संकल्प भी किया। वहीं पर क्रीडाचल को लाने की आज्ञा भी दी है। इसलिए मैं उसे ले जाने यहाँ आया हूँ। कृपया उस पहाड को ले जाने की अनुमति दीजिए।” तब लक्ष्मी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा। “श्रीहरि के उस अद्भुत एवं वैभवपूर्ण रूप को मैं भी देखना पसंद करती हूँ। शीघ्र ही उन्हें यहाँ ले आओ।” तब फिर करुणा से लक्ष्मी की वंदना करके गरुड ने फिर से कहा। “मैं बहुत विनयशील हो कर उन्हें यहाँ बुलाया है। फिर भी उन्होंने भूदेवी को छोड कर यहाँ नहीं आने की बात कहीं है। हे माई बहुत निठूर होकर उन्होंने यह कहा। सूकर के उग्र रूप में रहनेवाले स्वामी को देखकर आप भयभीत हो जाएगी, कह कर इनकार किया है।” तब लक्ष्मी ने हँस कर गरुड से इस रूप में कहा।

श्री लक्ष्मी के संवाद :

“मैं सदा उन की अनुपाइनी हूँ। यह जानते हुए भी आश्चर्य की बात है कि उन्होंने इस रूप में क्यों कहा है? मुझे तो यह किसी की माया है, लग रहा है। उन के किसी भी रूप में रहने पर भी मैं भी उसी प्रकार का रूप धारण करके निश्चित एवं निश्चल मन के साथ उनके साथ रही हूँ। सदा उन के हृदय में बसी हूँ। आज उनका इस रूप में व्यवहार मुझे नया लग रहा है खगेंद्र! अगर वे यहाँ पर नहीं आना चाहते हैं तो मैं ही वहाँ जाकर उन के साथ आनंद से रहूँगी। धरती पर उन के महिमान्वित वक्षःस्थल पर रहूँगी। इस के पहले भी कठोर प्रलय के समय मैं उन के वक्षःस्थल पर ही रही। स्वामी के कूर्म रूप धारण करके सागर में डूबने पर भी मैं उन के हृदय में ही रही। अंगुष्ट मात्र लघु रूप में पत्ते पर शयन करते समय भी मैं उन्हीं के साथ रही। चंद्र और चांदनी के कभी अलग नहीं होने की तरह मैं सदा उन्हीं के साथ रही। अब उन से अलग कैसे रह पाऊंगी? किसी भी रूप में यहाँ के परिवार के लोगों के साथ वहाँ धरती पर उस उग्र रूपधारी स्वामी के वक्षःस्थल पर ही रहूँगी। हे

निर्मलात्मा! मुझे भी वहीं ले चलो। मोद से भूदेवी के साथ क्रीडा करनेवाले स्वामी के पास ही मुझे भी इस क्रीडाचल के साथ ले चलो।''

गरुड के द्वारा क्रीडाद्री को लाना :

लक्ष्मी इस रूप में गरुड से कह कर परिवार समेत अपनी सारी कलाओं को वैकुंठ में ही छोड कर सिर्फ एक कला के साथ क्रीडाचल पहाड पर चढ गयी। तब गरुड लक्ष्मी की आज्ञा का पालन करते हुए क्रीडाद्री को जड से उखाड कर अपने सर पर लाद कर शीघ्र ही धरती पर उतरते समय क्रीडाद्री पर रहनेवाली लताएँ हवा में झूमने लगी। फूलों की वर्षा होने लगी। सुवर्णगिरि पर नीलाद्री की तरह सुवर्ण वेषधारी गरुड के सर पर क्रीडाचल बहुत अद्भुत लग रहा था। तब पूरा आकाश भी स्वर्णिम रंग से दिव्य कला से उद्धीप्त हुआ। चंदन, जंबीर, चंपक, वकुल आदि फूल-फल वृक्ष-लताओं से लद कर सुवर्ण, महारत्नों की कांति से सुशोभित उस उन्नत शिखरोंवाले क्रीडाचल

को, नीलकंठ, मोर, शुक आदि विहंगों के कलरव से प्रतिध्वनित होनेवाले क्रीडाचल को, कमल-नीलकमल आदि पुष्पराजों की सुगंध से भरे क्रीडाचल को, अत्यंत ललित सिद्ध पुरुषों की मुक्ति का आधार क्रीडाचल को, लक्ष्मी की कांति से सुशोभित क्रीडाचल को देखकर श्वेतवराह स्वामी को बहुत आनंद हुआ। उन को आश्चर्य भी हुआ। ऐसा स्वामी ने मन में सोचा कि 'आश्चर्य है कि लक्ष्मी भी मेरा पास आ गयी है। क्रीडाचल के साथ वैकुंठ का परिवार भी आ गया। मुझे यहाँ पर अवश्य वैकुंठ जैसा ही आनंद प्राप्त होगा।'

वराह स्वामी के क्रीडाचल पर बसना :

प्रसन्न चित्तवाले वराह स्वामी के पास आकर गरुड ने स्वामी के बताये स्थान पर क्रीडाचल को रखा। फिर स्वामी को दंडवत किया। तब वराह स्वामी अत्यंत प्रसन्न हुए। स्वामी क्रीडाचल पर चढ कर उस में स्थित स्वामिपुष्करिणी की पश्चिम दिशा में बसे। तब ब्रह्म, रुद्र, देवतागण, दिक्पाल, मुनि-ऋषि, गरुड, गंधर्व आदि महात्मागण ने वहाँ पहुँच कर श्वेतवराह स्वामी के दर्शन किए। साथ ही उन्होंने सकल निगमागम शास्त्रों की विधि में अनेक प्रकार से उन की स्तुति की है। सभी ने आनंदभाष्प नेत्रों के साथ पुलकित होकर स्वामी के साष्टांग प्रणाम किये। सभी ने जय जयकार करते हुए हाथ जोड कर श्रीहरि से इस रूप में कहा।

क्रमशः

श्री रामानुजाचार्य का कृतित्व

- डॉ.आर.एम.श्रीनिवासन
मोबाइल - 9176092616

सुप्रसिद्ध समाज-सुधारक, क्राँति व युग पुरुष, महान दार्शनिक, संत एवं यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने जन-हित एवं लोक-कल्याण हेतु सात दिव्य ग्रन्थों का करीब एक हजार वर्ष पूर्व ही प्रणयन किया था।

1. वेदार्थ संग्रहम्

प्रस्तुत ग्रन्थ उपनिषदों में प्रकाशित तीन मुख्य दार्शनिक तत्त्वों की उद्घोषणा पर प्रकाश डालता है।

'श्री रामानुज दर्शन' में दिव्य आत्मा के बारे में कुछ विशिष्ट सिद्धान्त हैं - 'धर्मभूत ज्ञान एवं स्वरूपभूत ज्ञान'।

ब्रह्म विश्वात्मा है और मूलाधार है। उपनिषदों के प्रस्तुत निष्कर्ष की विभिन्न पहलुओं की चर्चा प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राप्त होती है। 'वेदार्थ संग्रहम्' दार्शनिक प्रवृत्ति - अर्थात् सत्य के प्रति भक्ति-निष्ठा, व्यापक दृष्टिकोण, आवश्यक और खुले दिमाग के भीतर के अन्तर्ज्ञान की गहराई - के विशिष्ट गुणों का वर्णन करता है।

2. वेदान्त सारम्

प्रस्तुत ग्रन्थ में रामानुज वेदों का सांगोपांग विश्लेषण करके इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि भक्ति-योग आत्म ज्ञान का उपाय है और मोक्ष-प्राप्ति में 'परमानन्द' सन्निहित है। भक्ति का विशद वर्णन करते हुए सिद्ध करते हैं कि 'प्रपत्ति' द्वारा परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। फिर भी, भगवान के चयन, कृपा एवं दया के बिना कोई भी अपने ही प्रयासों से उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता।

3. श्रीभाष्यम्

'मोक्ष' के सच्चे पथ को निस्सन्देह सुस्थापित करने के लिए श्री रामानुज ने महर्षि व्यास के,

''ब्रह्मसूत्रों'' की व्याख्या के रूप में 'श्री भाष्यम्' ग्रन्थ की रचना की थी। इसमें चार अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय के 'पादम्' नामक चार भाग हैं जिनमें 'अधिकरणम्' नामक 156 प्रभाग अथवा शीर्षक हैं।

प्रथम अध्याय के अनुसार ''श्रियःपति'' अर्थात् श्रीमन्नारायण सम्पूर्ण विश्व के सृष्टिकर्ता हैं, मूलाधार हैं।

द्वितीय अध्याय 'अरिरोधाध्यम' जिसमें स्मृतियों, उपनिषदों आदि के संगत शब्दों एवं सूक्तियों के सहारे संशयों एवं विरोधों का निराकरण किया गया है।

तृतीय अध्याय, परमात्मा के साथ एकाकार होने के लिए अनुपालनीय प्रविधि पर प्रकाश डालता है।

चतुर्थ ''फलाध्याय'' प्राप्य फलों, उसके उपायों और प्रत्येक के परिणाम पर हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

संक्षेप में, चारों अध्याय परमात्मा के दिव्य कल्याण-गुणों की स्तुति करते हैं।

सूत्र रचित श्री व्यास जी के विचारों को, महर्षि बोधायन के मार्ग में ही जाकर युक्ति युक्त तात्त्पर्य को यथावत् दर्शाने के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ का नामकरण स्वयं साक्षात् सरस्वती देवी ने ''श्रीभाष्यम्'' किया था।

4. वेदांत दीपम्

प्रस्तुत ग्रन्थ 'श्रीभाष्यम्' का संक्षिप्त रूप है और सारगर्भित है। इसमें चार अध्याय हैं।

प्रथम ''समानाध्याय'' बताता है कि समस्त उपनिषद् 'ब्रह्म' को विश्व-सृष्टिकर्ता मानते हैं।

द्वितीय ''अविरोधाध्याय'' सिद्ध करता है कि 'ब्रह्म' को विश्व के सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार करने में वेदों अथवा अन्य सम्बद्ध ग्रन्थों में कोई विरोध नहीं है।

तृतीय ''साधनाध्याय'' में मोक्ष-प्राप्ति हेतु परमात्मा की पूजा-आराधना संबंधी बातें हैं।

चतुर्थ ''फलाध्याय'' फल अथवा 'मोक्ष' की प्रकृति और उसके दूसरे पहलुओं के बारे में चर्चा करता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में वेदों के बारे में बताया गया है- जैसे वर्ष के प्रत्येक ऋतु में गोलाकार रूप में उत्पाद होते हैं वैसे ही समस्त युगों और कल्पों आदि में पूर्व जैसे ही उन्हीं सारी वस्तुओं की सृष्टि की जाती है।

जैसे पहले वेद अविनाश रहे और वेदाध्ययन एवं वेद-घोष होते थे वैसे वेद आज भी हैं और सदा-सदैव स्वयं परमात्मा की भाँति अमर रहेंगे।

5. गीता भाष्यम्

''भगवद्गीता'' के श्री रामानुजाचार्य का स्पष्टीकरण ''गीता भाष्य'' है। जिसमें परमात्मा के प्रति सम्पूर्ण विश्वास पर बल देते हैं। भक्ति-मार्ग में प्रगति-क्रम की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए हमें समझाते हैं-

कर्म-योग, ज्ञान-योग का मार्ग-दर्शन करता है, अपनी आत्मानुभूति द्वारा ज्ञान-योग, भक्ति-योग का मार्ग खोलता है। भक्ति-योग, जीवन के अन्तिम उद्देश्य का तत्काल मार्ग है। श्री रामानुज आगे उपदेश देते हैं- भक्ति-योग के प्रारम्भ की बाधाएँ भगवान के पद्मपादों की शरण द्वारा दूर की जा सकती हैं।

ऐसे अड़चनों से बचने के लिए कठिन प्रायश्चित्तों की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रभु के पद्मपादों में 'प्रपत्ति' के बिना कोई भी जीव कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। प्रस्तुत ग्रन्थ 'देवत्व' के प्रति प्रगति करने मानवता के लिए विश्वसनीय मार्गदर्शिका है।

6. गद्य त्रयम्

''शरणागति'' अथवा ''प्रपत्ति'' का गद्यात्मक गीत - ''शरणागति गद्यम्'', ''श्रीरंग गद्यम्'' और ''श्री वैकुण्ठ गद्यम्'' - जो समग्र रूप से ''गद्यत्रयम्'' नाम से सुविख्यात हैं।

''शरणागति गद्यम्'' में प्रथम चूर्णिका के प्रथम वाक्य में ही श्री रामानुज सर्वप्रथम ''श्री'' अथवा ''महालक्ष्मी'' की शरण में जाते हुए उनसे विनीत प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें 'प्रपत्ति' प्रदान करें - ''शरणमहं प्रपद्ये'' - क्यों कि वे जानते हैं कि महालक्ष्मी की कृपा से ही जीवात्मा के महापापों को भी क्षमा करने की उनकी सिफ़ारिश को ''श्रियःपति'' स्वीकार करते हैं और उनके द्वारा संस्तुत जीवात्मा को अपनी शरण प्रदान करते हैं।

'शरणागति' सिद्धांत 'श्री वैष्णवम्' की रीढ़ की हड्डी है। सबसे महत्त्वपूर्ण विषय है। ''शरणागति गद्यम्'' और ''श्रीरंगगद्यम्'' दोनों प्रथम पुरुष, एक वचन में रचित हैं तथा ''शरणागति'' प्राप्त करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है।

'श्रीरंग गद्यम्' में प्रपत्ति के लिए विशिष्ट रूप से अपेक्षित योग्यताओं की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में पाँच चूर्णिकाएँ और दो श्लोक हैं।

कहा जाता है कि ''वैकुण्ठ गद्यम्'', 'मुक्ति' के एक मात्र उपाय के रूप में 'प्रपत्ति' का उचित ढंग से निष्पादन करने के लिए श्री रामानुज द्वारा अपने शिष्यों को प्रदान किया गया अनुदेश है। भगवान महाविष्णु के विशेष अनुग्रह और परम-कृपा के रूप में 'परमपद' श्री वैकुण्ठ के प्रत्यक्ष दर्शन करने का परम सौभाग्य श्री रामानुज को प्राप्त हुआ था। ''वैकुण्ठ गद्यम्'' मुक्त जीवात्मा के चक्षुओं के द्वारा ''श्री वैकुण्ठ'' का आँखों देखा दिव्य वर्णन है जो दिव्याद्भुत विशेषणों से बिल्कुल ओतप्रोत है और पाठक और श्रोता दोनों को निश्चित रूप से मंत्रमुग्ध कर देता है। प्रस्तुत ग्रंथ का महत्वपूर्ण संदेश यह है कि भगवान ''श्रीमन्नारायण'' के पद्मपादों में की जानेवाली शरणागति ''नारायण सायुज्यम्'' का फल, परिणाम ''श्रीमन्नारायण'' के समीप होने और उनके चरण-कमलों में लीन होने का सौभाग्य प्रदान करेगी - 'सालोक्यम्', 'सारूप्यम्', 'शुद्धसत्वं' एवं 'सामीप्यम्' आदि सम्भव हैं।

'वैकुण्ठ गद्यम्'' में, अनन्त, गरुढ़, विश्वक्सेन, द्वारपालक जैसे नित्यसूरियों द्वारा निष्पादित दिव्य कैंकर्यों, भगवान की दिव्य सेवाओं की सुन्दरतम रीति से प्रशंसा की गयी है। प्रतीक्षित 'मुक्त' के लिए प्राप्त होनेवाली असीम और अपार 'निधि' की संक्षिप्त झाँकी अद्भुत ढंग से चित्रित है।

नित्यग्रन्थम

श्री वैष्णव भक्तों को 'नित्य कर्मानुष्ठान' के बारे में पथ-प्रदर्शन करने के लिए श्री रामानुज द्वारा अनुग्रहीत एक संक्षिप्त मैनुएल है ''नित्यग्रन्थम्'' अथवा ''भगवत् आराधना प्रयोग''। अपने पूर्वाचार्यों जैसे नाथमुनि, यामुनाचार्य की परम्परा से, अग्रसर और अनुपालनीय 'भगवत् आराधना-क्रम' की सुस्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत ग्रन्थ में उपलब्ध है।

श्री रामानुजाचार्य ने अपने आदर्शपूर्ण और अनुकरणीय 120 वर्षों के सुदीर्घ जीवन को ''सर्वे जनः सुखिनो भवन्तु'' के अनुसार लोक-कल्याण के लिए लोकार्पित करते हुए और अपने उपेदशों का अपने ही जीवन में अक्षरशः पालन करते हुए साबित कर दिया कि मनुष्य का जीवन सार्थक और आदर्शोन्मुख होना चाहिए।

ऋषि-मुनि

महर्षि गौतम

- डॉ.जी.सुजाता, मोबाइल - 9494064112.

सप्तर्षि मंडल में एक दीप्तिमान नक्षत्र और न्याय शास्त्र के रचनाकार परम पूज्य श्री महर्षि गौतम थे। इन्हें अक्षपाद गौतम के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय ऋषि परम्परा में महर्षि गौतम का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता हैं। इनकी गणना सप्तर्षियों में की जाती है। ऋग्वेद में भी इनके बारे में उल्लेख मिलता हैं, वे वैदिक काल के एक महर्षि एवं मन्त्र द्रष्टा थे। ऋग्वेद के कुल 10522 मंत्रों में से 213 मंत्र, यजुर्वेद के कुल 1915 मंत्रों में से 67 मंत्र, सामवेद के कुल 1875 मंत्रों में से 68 मंत्र, अथर्वणवेद के कुल 5977 मंत्रों में से 27 मंत्र, अर्थात कुल 315 मंत्रों के मंत्रदृष्टा महर्षि गौतम हैं। इसलिए इन्हें तपस्वी माना गया है।

उनके जन्म को लेकर धार्मिक एवं दार्शनिक मान्यताएँ अलग-अलग हैं। कहीं-कहीं पुराणों में ऐसी कथा मिलती है कि महर्षि अन्धतमा जन्म के अन्धे थे, उनपर स्वर्ग की कामधेनु प्रसन्न हो गयी और उस गौ ने इनका तम हर लिया। ये देखने लगे। तब से इनका नाम गौतम पड़ गया। ये ब्रह्माजी का मानस सृष्टि के हैं। उनकी पत्नी का नाम अहिल्या था। वामन पुराण के अनुसार, उनकी तीन बेटियां थीं जिनका नाम जया, जयंती और अपारिता था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार शतानन्द व विजय नाम से दो पुत्र थे। और आदिपर्व के अनुसार, उनके सरदवन और सिरकरी नाम के दो पुत्र थे। सरदवन को गौतम के नाम से भी जाना जाता था, इसलिए उनके पुत्र कृपा और कृपी को क्रमशः गौतम और गौतमी कहा जाता था। इस गौतम के अलावा अंजना नाम की बेटी भी है जो भगवान हनुमान की माँ हैं।

संस्कृत साहित्य में गौतम का नाम अनेक विद्याओं से जुडा है। वे न्यायसूत्रों के रचयिता माने जाते हैं जिन्होंने न्याय दर्शन में न्याय सूत्रों का प्रणयन किया और इस आन्वीक्षिकों को क्रमबद्ध कर शास्त्र के रूप में प्रतिस्थापित किया। वैदिक ऋषि गौतम ने भगवान शिव के आदेश पर इस शास्त्र की रचना की। इसका वर्णन शिव महापुराण में मिलता है। वर्तमान समय में विश्व में उपस्थित कानून प्रणाली प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इसी शास्त्र पर आधारित है।

वास्तव में गौतम ऋषि के गोत्र में उत्पन्न किसी व्यक्ति को ''गौतम'' कहा जा सकता है अतः यह व्यक्ति का नाम न होकर गोत्रनाम है। उपनिषदों में भी गौतम नामधारी अनेक व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है। पुराणों, महाभारत तथा रामायण में भी गौतम की चर्चा है। यह कहना कठिन है कि ये सभी गौतम एक ही है। रामायण में ऋषि गौतम तथा उनकी पत्नी अहिल्या की कथा मिलती है।

विवाह :

अहिल्या ब्रह्म की मानस पुत्री थी जो विश्व में सुंदरता में अद्वितीय थी। भगवान ब्रह्म ने अहिल्या की

सृष्टि उच्च गुणों के साथ की थी। वे ऐसे गुणवान व्यक्ति की तलाश कर रहे थे, जो उनके बाद अहिल्या की देखभाल कर सकें। इसलिए उन्होंने महर्षि गौतम को चुना, जिनके पास बहुत सारी बुद्धिमत्ता और ज्ञान उपलब्ध थे। जब अहिल्या बड़ी हुई तब ब्रह्माजी उन्हें महर्षि के आश्रम ले गये तथा इस बात का निर्णय किया कि वे उनकी शादी किसी साधु से ही करेंगे मगर शर्त यह रखी कि जो कोई पृथ्वी का चक्कर लगाकर सबसे पहले आएगा, उसी का विवाह अहिल्या से होगा। सभी देव तथा ऋषि पृथ्वी के चक्कर लगाने के लिए चल पड़ते हैं उसी समय ऋषि गौतम की कामधेनु गाय-बछड़े को जन्म दे रही थी, ऋषि उसकी मदद कर रहे थे। अहिल्या ऋषि गौतम को कामधेनु गाय के प्रसव कराने में मदद करते हुए देखती है। वह उस गाय के प्रति उनका समपर्ण और प्रेम देखकर उनसे शादी करने की इच्छा जताती है। अहिल्या की इच्छा के मुताबिक ब्रह्माजी ने उनका विवाह गौतम ऋषि से सम्पन्न करवा दिया। सभी देवता और ऋषि इस विवाह से पूरी तरह ईर्ष्या के भाव में थे। लेकिन कहते हैं कि इंद्र देवता को अहिल्या बहुत पसंद थी। एक बार गौतम ऋषि की अनुपस्थिति में देवराज इन्द्र उनका वेश लेकर आश्रम में प्रवेश कर, अहिल्या के सामने प्रणय निवेदन करते हैं। अहिल्या, इन्द्र की असलियत जानने के बाद भी उनके साथ संबंध स्थापित करती हैं। कुछ कथाओं के अनुसार ऐसा कहा जाता हैं कि यह इंद्र का धोखा था जिसे अहिल्या समझ नहीं पाई। कई जगह इस बात का उल्लेख है कि जब अहिल्या यह जान लेती हैं कि उनके पति के वेश में इन्द्र उनके प्रति आकर्षित हुए हैं। इसी कारण वे संबंध स्थापित करने की अनुमति दे देती हैं। वहीं कुछ दस्तावेज यह

कहते हैं देवी अहिल्या ने इन्द्र को अपना पति मानकर ही उनके साथ संबंध स्थापित किए थे।

जब गौतम ऋषि ने इन्द्र को अपने ही वेश में अपने आश्रम से निकलते हुए देखा तब वह सारी बात समझ गये। क्रोधावेग में उन्होंने अपनी पत्नी अहिल्या को पत्थर बन जाने का श्राप दिया। जब ऋषि का गुस्सा शांत हुआ और उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ तो उन्होंने अहिल्या से कहा कि तुम्हें इसी तरह ही प्रायश्चित करना होगा और जब भगवान विष्णु के मानवरूप श्रीराम यहाँ आएँगे और इस शिला पर अपने पवित्र चरण रखेंगे तब तुम्हारा उद्धार होगा। ऐसा ही हुआ जब भगवान विष्णु ने रामावतार लिया। एक बार गुरु विश्वामित्र भगवान राम के साथ भ्रमण कर रहे थे तो जब उन्होंने गौतम ऋषि के सुने पड़े आश्रम के बारे में जाना तो विश्वामित्र ने उन्हें अहिल्या की पूरी कहानी बताई जिसे सुन भगवान राम ने अहिल्या को श्राप मुक्त किया।

गौतम ऋषि के क्रोध का परिणाम इंद्र को भी भुगतना पड़ा, चूँकि उन्होंने अहिल्या के स्त्री धर्म को नष्ट किया। अपनी वासना की पूर्ति के लिए पराई नारी पर नजर डाली। ऋषि ने श्राप दिया कि तेरे शरीर पर हजार स्त्री योनी उत्पन्न होंगी। कुछ ही पलों में श्राप का प्रभाव इन्द्र के शरीर पर पड़ने लगा और उनके पूरे शरीर पर स्त्री योनियाँ निकल आयीं। ये देखकर इन्द्र आत्मग्लानिता से भर उठे। उन्होंने हाथ जोड़कर गौतम ऋषि से श्राप मुक्ति की प्रार्थना की। ऋषि ने इन्द्र पर दया करते हुए हजार योनियों को हजार आंखों में बदल दिया। इन्द्र को 'देवराज' की उपाधि देने के साथ ही उन्हें देवताओं का राजा भी माना जाता है लेकिन उनकी पूजा एक भगवान के तौर पर नहीं की जाती। इन्द्र द्वारा ऐसे ही अपराधों के कारण उन्हें दूसरे देवताओं की तुलना में ज्यादा आदर-सत्कार नहीं दिया जाता।

पौराणिक कथा :

एक बार महर्षि गौतम के तपोवन में रहने वाले ब्राह्मणों की पत्नियाँ किसी बात पर उनकी पत्नी अहिल्या से नाराज हो गयीं। उन्होंने अपने पतियों को ऋषि गौतम का अपकार करने के लिए प्रेरित किया। उन ब्राह्मणों ने इसके निमित्त भगवान श्री गणेशजी की आराधना की। उनकी आराधना से प्रसन्न हो गणेशजी ने प्रकट होकर उनसे वर मांगने को कहा। तब उन ब्राह्मणों ने कहा- प्रभो! यदि आप हम पर प्रसन्न हैं तो किसी प्रकार ऋषि गौतम को इस आश्रम से बाहर निकाल दें। उनकी यह बात सुनकर गणेशजी ने उन्हें ऐसा वर मांगने के लिए समझाया। किंतु वे अपने आग्रह पर अटल रहे। अंततः गणेशजी को विवश होकर उनकी बात माननी पड़ी। अपने भक्तों का मन रखने के लिए वे एक दुर्बल गाय का रूप धारण करके ऋषि गौतम के खेत में जाकर रहने लगे। गाय को फसल चरते देखकर ऋषि बड़ी नरमी के साथ हाथ में तृण लेकर उसे हांकने के लिए लपके। उन तृणों का स्पर्श होते ही वह गाय वहीं मरकर गिर पड़ी। तब तो बड़ा हाहाकार मचा। सारे ब्राह्मण एकत्र हो गो-हत्याकार कहकर ऋषि गौतम की भर्त्सना करने लगे। ऋषि गौतम इस घटना से बहुत आश्चर्यचकित और दुःखी थे। अब उन सारे ब्राह्मणों ने कहा कि तुम्हें यह आश्रम छोड़कर अन्यत्र कहीं दूर चले जाना चाहिए। गो-हत्यारे के निकट रहने से हमें भी पाप लगेगा।

विवश होकर ऋषि गौतम अपनी पत्नी अहिल्या के साथ वहाँ से एक कोस दूर जाकर रहने लगे। किंतु उन ब्राह्मणों ने वहाँ भी उनका रहना दूभर कर दिया। वे कहने लगे गो-हत्या के कारण तुम्हें अब वेद-पाठ और यज्ञादि के कार्य करने का कोई अधिकार नहीं रह गया। अत्यंत अनुनय भाव से ऋषि गौतम ने उन ब्राह्मणों से प्रार्थना की कि आप लोग मेरे प्रायश्चित और उद्धार का कोई उपाय बताएँ। तब उन्होंने कहा- गौतम! तुम अपने पाप को सर्वत्र सबको बताते हुए तीन बार पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करो। फिर लौटकर यहाँ एक महीने तक व्रत करो। इसके बाद ब्रह्मगिरि की 101 परिक्रमा करने के बाद तुम्हारी शुद्धि होगी अथवा यहाँ गंगाजी को लाकर उनके जल से स्नान करके एक करोड़ पार्थिव शिवलिंगों से शिवजी की आराधना करो। इसके बाद पुनः गंगाजी में स्नान करके इस ब्रह्मगिरि की 11 बार परिक्रमा करो। फिर सौ घड़ों के पवित्र जल से पार्थिव शिवलिंगों को स्नान कराने से तुम्हारा उद्धार होगा। ब्राह्मणों के कथनानुसार महर्षि गौतम वे सारे कार्य पूरे करके पत्नी के साथ पूर्णतः तल्लीन होकर भगवान शिव की आराधना करने लगे। इससे प्रसन्न हो भगवान शिव ने प्रकट होकर उनसे वर मांगने को कहा। महर्षि गौतम ने उनसे कहा- भगवान मैं यही चाहता हूँ कि आप मुझे गो-हत्या के पाप से मुक्त कर दें।

भगवान शिव ने कहा- गौतम! तुम सर्वथा निष्पाप हो। गो-हत्या का अपराध तुम पर छलपूर्वक लगाया गया

था। छलपूर्वक ऐसा करवाने वाले तुम्हारे आश्रम के ब्राह्मणों को मैं दण्ड देना चाहता हूँ। इस पर महर्षि गौतम ने कहा कि प्रभु! उन्हीं के निमित्त से तो मुझे आप के दर्शन प्राप्त हुए हैं। अब उन्हें मेरा परमहित समझकर उन पर आप क्रोध न करें। बहुत से ऋषियों, मुनियों और देवगणों ने वहाँ एकत्र होकर गौतम की बात का अनुमोदन करते हुए भगवान शिव से सदा वहाँ निवास करने की प्रार्थना की। वे उनकी बात मानकर वहाँ 'त्रयंब ज्योतिर्लिंग' के नाम से स्थित हो गए।

त्रयंबकेश्वर मंदिर और गाँव ब्रह्मगिरि नामक पहाड़ी की तलझटी में स्थित है। इस गिरि को शिव का साक्षात रूप माना जाता है। अपने ऊपर लगे गोहत्या के पाप से मुक्ति पाने के लिए गौतम ऋषि ने कठोर तप कर शिव से गंगा को यहाँ अवतरित करने का वरदान मांगा। फलस्वरूप दक्षिण की गंगा अर्थात गोदावरी नदी का उद्गम हुआ। गोदावरी के उद्गम के साथ ही गौतम ऋषि के अनुनय-विनय के उपरांत शिवजी ने इस मंदिर में विराजमान होने को स्वीकार कर लिया। तीन नेत्रों वाले शिवशंभु के यहाँ विराजमान होने के कारण इस जगह को त्रयंबक (तीन नेत्रों वाले) कहा जाने लगा।

अहिल्या के शाप का उद्धार राम ने मिथिला के रास्ते में किया था। अतः गौतम का निवास मिथिला में ही होना चाहिए और यह बात मिथिला में 'गौतमस्थान' तथा 'अहल्यास्थान' नाम से प्रसिद्ध स्थानों से भी पुष्ट होती है। चूँकि न्यायशास्त्र के लिये मिथिला विख्यात रही है अतः गौतम (नैयायिक) का मैथिल होना इसका मुख्य कारण हो सकता है।

पूरे भारतवर्ष में स्थित इनके स्थानों में नासिक विशेष रूप से प्रसिद्ध है जहाँ उन्होंने माँ गंगा तथा भगवान शिव की तपस्या करके श्री त्रयंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग की स्थापना की तथा गौतमी गंगा (गोदावरी) का प्राकट्य कराया जो दक्षिण भारत के एक बड़े भू भाग को तृप्त करती हैं, त्रयंबकेश्वर (नासिक) मई गोदावरी नदी के उद्गम स्थल को ही महर्षि गौतम का स्थल मानते है। जहाँ गोदावरी गंगा-भागीरथी-गंगा से पहले अवतरित हुई थी, यही पर्वत महर्षि की तपोभूमि रही।

उत्तरप्रदेश की गोमती नदी भी ऋषि गौतम के ही नाम से विख्यात है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में स्थित गौतमेश्वर महादेव तीर्थ में स्थित मंदाकिनी गंगा कुंड के बारे में भी मान्यता है कि इसी कुंड में स्नान करने के पश्चात महर्षि गौतम को गौ हत्या के दोष से मुक्ति मिली थी। इसके पश्चात महर्षि गौतम ने यहाँ महादेव की आराधना करके एक स्वयंभू शिवलिंग प्रकट किया था जो आज भी उन्हीं के नाम पर गौतमेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है।

नवयुवकों के विकास में इष्ट भक्ति और गुरु भक्ति का योगदान

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालीया, मोबाइल - 9825113636

यस्य देवे पराभक्तिः यथा देवे तथा गुरौ। तस्यैते कथिता ह्यर्थाः,

प्रकाशन्ते महात्मनः

सदा विघ्न हर्ता महाकष्ट हर्ता
शरीरेण दृष्ट्या, सदा चित्त हर्ता।
निमग्नो मुदा यः स्वरूपे हि नित्यं,
गणेशस्वरूपं गुरुं वै नमामः

हमारे जीवन के समस्त विघ्नों और कष्टों को हरण करने वाले और अपने भक्तों के चित्त का हरण करने वाले गणेश स्वरूप श्री सद्गुरु के श्रीचरणों में प्रणाम निवेदन करती हूँ। शास्त्रों में गुरु की महिमा का वर्णन बहुत किया गया है।

गुरु कैसा होना चाहिए? तो शास्त्रों में बताया गया है कि श्रोत्रिय ब्रह्म निष्ठ, वेद शास्त्रों का ज्ञाता, परमात्मा के स्वरूप का अनुभव करने वाला गुरु होना चाहिए। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि-

तद्विद्धि प्रणिपातेन
परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं,
ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।

अर्जुन! तुझे यदि ज्ञान प्राप्त करना है तो तू तत्व दर्शी ज्ञानी के पास जा। गुरु के दो विशेषण हैं तत्वदर्शी और ज्ञानी। तत्वदर्शी का अर्थ है ब्रह्मनिष्ठ और ज्ञानी का अर्थ है श्रोत्रिय। जिसके अन्दर ये दोनों विशेषताएँ हों, वह गुरु हमारे अज्ञानांधकार को दूर कर सकते हैं। क्योंकि परमात्मा का ज्ञान आंख से नहीं हो सकता, कान से नहीं हो सकता, प्रत्यक्ष से नहीं हो सकता, अनुमान से नहीं हो सकता, परमात्मा का ज्ञान श्रुति से हो सकता है, उपनिषदों से हो सकता है। और उन

उपनिषदों का अर्थ गुरु बताते हैं। इसलिए उपनिषद् में कहा गया है कि-

यस्य देवे पराभक्तिः
यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः
प्रकाशन्ते महात्मनः।।

जिस साधक की अपने इष्ट देव में भक्ति है। और जितनी भक्ति इष्ट देव में है उतनी ही भक्ति अपने गुरु में है उसी को वेदांत के अर्थ का बोध होता है। ऐसे गुरु के पास जाकर प्रणिपात हो, फिर प्रश्न करे, और उत्तर समझ में न आए तो ''सेवया'' कुछ काल तक सेवा करे। इतने से यदि आप में पात्रता आ जायेगी तो आपको गुरु के उपदेश से ज्ञान हो जायेगा। ज्ञान के मार्ग में गुरु का महत्व है, भक्ति के मार्ग में भी गुरु का महत्व है। जब गुरु बताते हैं तब हमें भगवान का ज्ञान होता है। इसीलिए कबीर बाबा ने कहा कि-

गुरु गोविंद दोनों खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।

जब गुरु ने बताया कि ये गोविंद हैं तब हम समझे कि ये गोविंद हैं। अन्यथा हम क्या जानें कि कौन परमात्मा है। अपने सनातन धर्म

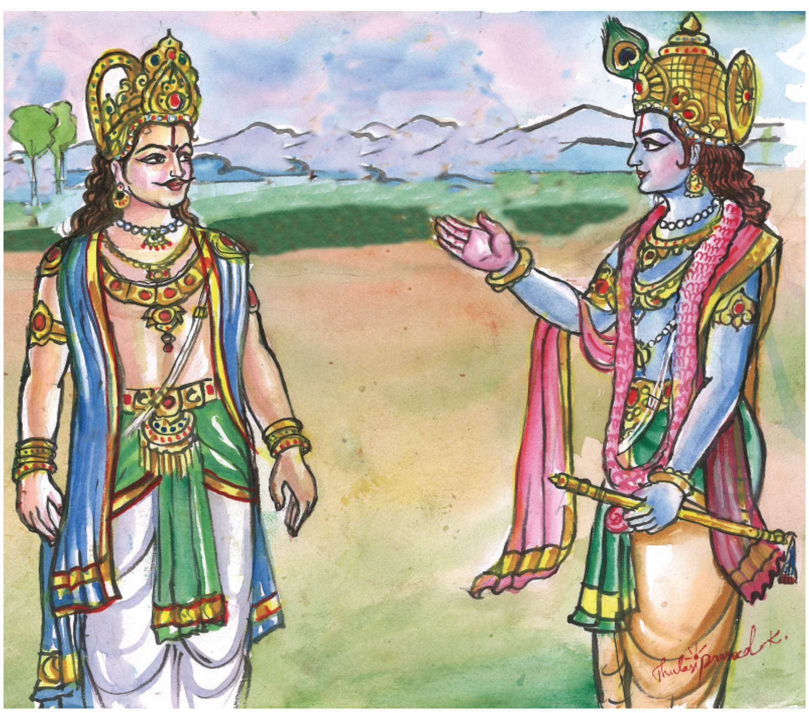

में तो गुरु के पिता माना जाता है। एक तो शरीर को जन्म देने वाले पिता, और दूसरे हमारे साधना के जन्म दाता, धर्म के जन्म दाता तो गुरु ही होते हैं। हमारे यहाँ कन्यादान का विधान है। पिता अपने हाथ में कुश लेकर बोलता है।

इमां लक्ष्मींस्वरूपिणीं कन्यां,
विष्णु रूपाय वराय तुम्भमहं संप्रददे।

अर्थात मैं अपनी इस लक्ष्मी स्वरूपिणी कन्या को आप विष्णु रूप वर को प्रदान करता हूँ। इसी प्रकार शिष्य जब गुरु की शरण में जाता है तो गुरु उसे भगवान के चरणों में समर्पित कर देता है। प्रभु! आज से ये आपका है आप इसकी रक्षा करें। इसलिए गुरु को धर्म पिता कहते हैं और जो शिष्य हैं वे आपस में गुरु भाई कहते हैं। ये नाता पक्का होता है। इस प्रकार गुरु की महिमा ज्ञान मार्ग में भी है और भक्ति मार्ग में भी है। कभी-कभी तो श्री जी ही गुरु बनकर भक्त को अपने प्रियतम प्रभु का ज्ञान करा देती हैं। इसलिए हमारे आध्यात्मिक जीवन में गुरु का होना अति आवश्यक है।

यस्य देवे पराभक्तिः
यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः
प्रकाशन्ते महात्मनः।।

अर्जुन और हनुमान - गुरु और शिष्य :

हमारे हिन्दू संस्कृति में अर्जुन और हनुमान जी दोनों के जीवन में द्रष्टिपात

करे तो मालुम पड़ता है कि- अर्जुन के लिए अपना सच्चा गुरु, अपना प्रिय इष्टदेव, जीवन का सच्चा मार्गदर्शक जो भी कहे वह जगद्‌गुरु श्रीकृष्ण ही था। अर्जुन श्रीकृष्ण से बहुत निकट था, उसने ज्यादातर समय श्रीकृष्ण के साथ ही व्यतीत किया। सही शिक्षा भी श्रीकृष्ण ने ही दी। जब धर्म युद्ध की बात आयी तब श्रीकृष्ण ही अर्जुन की ओर से संदेशवाहक बनकर युद्ध को रोकने के लिए कौरवों की सभा में गये, होनी को कौन टाल सकता है? युद्ध तो होना ही था तब अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण को ही अपना सारथी बनाया और श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन से ही धर्मयुद्ध में विजय प्राप्त की, और मार्गदर्शन पूरे विश्व के लिए सही जीवन का मार्गदर्शन बन गया और मोक्ष की प्राप्ति का भी साधन बन गया। अर्जुन के बिना श्रीकृष्ण को और श्रीकृष्ण के बिना अर्जुन को सोच ही नहीं सकते, दोनों एक दूसरे का पूरक है।

रामायण के हनुमान जी की बात करे तो, हनुमान जी और प्रभु श्रीराम का रिश्ता ऐसा ही गाढा था। हनुमान जी भी श्रीराम को अपना गुरु और अपना इष्ट दोनों ही मानता था। किष्किन्धा में प्रभु राम को हनुमान जी से भेंट हुई, तब से लेकर रामावतार की समाप्ति तक हनुमान जी एक पल के लिए भी श्रीराम से दूर नही हुआ। हनुमान जी जैसा कोई सेवक और भक्त होइ नही सकता। श्रीराम और हनुमान जी भी एक दूसरे का हिस्सा है। सीतापहरण में माता जी की खोज, सेतुबंध और लंका के नाश में ये सब हनुमान जी की प्रभु श्रीराम के प्रती निष्ठा ही प्रकट होती है। एक समय की बात है, जब प्रभु श्रीराम अपनी अवतार-लीला को समेटकर वैकुण्ठ की ओर जा रहे थे तब पूरे अयोध्यावासियों को साथ में लेकर चल रहे थे, इस यात्रा में हनुमान जी नहीं थे तब श्रीराम ने हनुमान जी से पूछा तुम साथ में क्यों नहीं आ रहे हो? तब हनुमान जी ने जवाब दिया की ''प्रभु राम इस अवतार काल में इस संसार में आपके निकट रहकर एक-एक पल बिताया है वे पल मुझे वैकुण्ठ में नहीं मिलनेवाले हैं। इसलिए मैं यही इस संसार में रहकर आपसे बिताए हुए समय का आनंद लेना चाहता हूँ। अनुसंधान करना चाहता हूँ। यही थी अर्जुन और हनुमान जी की गुरुभक्ति और इष्ट भक्ति।

नवयुवकों को क्या मार्गदर्शन है?

अर्जुन और हनुमान जी के माध्यम से कहने का तात्पर्य यह है कि आज के नवयुवकों को अपने जीवन में कोई भी सफलता प्राप्त करने के लिए इष्टदेव और अपने गुरु जी के प्रती निष्ठावान रहकर श्रद्‌धा से आगे बढना चाहिए। तभी वांछित सफलता मिल सकती है।

जय श्रीमन्नारायण

(गतांक से)

मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्

तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन.सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

तै ओरु तिंगळुम् तरै विळक्कि
तण् मण्जलम् इट्टु मासी मुन्नाळ्
ऐय नुण् मणल् कोण्डु तेरु अणिन्दु
अळगिनुक्कु अलंगरित्तु अनंगदेवा
उय्यवुम् आंकोलो ऐन्ड्रु सोल्ली
उन्नैयुम् उम्बियैयुम् तोळुदेन्
वेयदु ओर् तल् उमिळ् कस्करक् कै
वेंगडवर्क्कु ऐन्नै विदिक्कुट्रियेे।। (504)

कठिन शब्दार्थ - तै-पौष, तरै-जमीन, मासी-माघ, नुण् मणल्-पतले रेत, तेरु-गली, उम्बि-छोटा भाई, तळल्-आग।

भावार्थ - आण्डाल(गोदा) किसी न किसी तरह श्री वेंकटेश्वर को अपने पति के रूप में पाने का प्रयास करती है। इसके लिए वह अनेक प्रकार की उपासनाओं को अपनाती है। यहाँ तक सोचती है कि प्रेम के देव कामदेव की उपासना से उसकी इच्छा सफल होगी। इसलिए वह अपने पद्य में कहती है, ''हे कामदेव! पौष महीने भर जमीन को साफ करके ठंडा जल छिडकाकर एक मंडल तक याने माघ महीने में शुक्ल पक्ष तक तुम्हारे आने के पथ पर रेत से सुन्दर रंगोली रचती हूँ। वेदना से बचने का उपाय सोचकर तुम्हारी उपासना करने के साथ तुम्हारे भाई समान की पूजा करती हूँ। तुम अग्नि को प्रकट करने वाले चक्र को अपने हाथ में धरने वाले श्री वेंकटेश्वर के साथ मुझे मिला दो।''

मतलब यह है कि गोदा की इच्छा यह है कि उसका मिलन श्री वेंकटेश्वर के साथ हो जाए। उसके लिए वह अनेक उपाय करती है। आखिर कामदेव से अपनी इच्छा को पूर्ण करने का निवेदन करती है।

मत्त न् मरुमल् मुरुक्कु मलर्

कोण्डु मुप्पोदुम् उन् अडि वणंगित्

तत्तुवम् इलि एन्ड्र नेंजु ऐरिन्दु

वासगत्तु अत्तु उन्नै वैदिडामे,

कोत्तु अलर् पूंगळै तोडुत्तुक् कोण्डु

गोविन्दन् ऐन्बदु ओर् पेर् ऐळुदी

वित्तगन् वेंगड वाणन् ऐन्नुम्

विळक्किनिल् पुग ऐन्नै विदिक्किट्रियेे।। (506)

कठिन शब्दार्थ - मत्त-धतूरा, मुरुक्क मलर्-दूध वाला फूल, वणंगि-उपासना करना, वैदल-गाली देना, पूंकणै-सुमन बाण, पेर-नाम, विळक्कु-दीप।

भावार्थ - गोदा की इच्छा है कि श्री वेंकटेश्वर के साथ उसका मिलन हो जाए। इस प्रयास में वह कामदेव से अपनी प्रार्थना करती है। वह कामदेव को समझाती है कि वह देर किए बिना उसकी इच्छा को पूर्ण कर दे। इसलिए वह गाती है, ''हे कामदेव! सुगंधित धतूरा फूल तथा दूध वाला फूल आदि से तीनों पहर तुम्हारे चरण की उपासना करती हूँ। पर ऐसा लगता है कि तुम मेरी प्रार्थना को जल्दी पूर्ण करने वाला नहीं हो। मुझे तुम्हारे व्यवहार से क्रोधित होकर, यह तो ईमानदार नहीं है, यह तो वचन बद्ध नहीं है, ऐसी गालीयाँ देने के पहले तुम गोविंद का नाम हृदय पर लिखकर अपने सुमन के गुच्छों के बाण से तिरुवेंकटगिरि पर रहने वाले महादीप के बराबर अपना प्रकाश फैलाने वाले के साथ मुझे मिला दो।''

मतलब यह है कि गोदा प्रेम के देवता कामदेव को समझाती है कि सुमन बाण के छोडने के बल से श्री वेंकटेश्वर के साथ उसे मिला दे।

काट्टिल् वेंगडम् कण्णपुर नगर

वाट्टम् इंड्रि मगिळ्न्दु उरै वामनन्

ओट्टरा वन्दु ऐन् कैप्पट्रि, तन्नोडुम्

कूट्टुमागिल्, नी कूडिड्डु कूडले।। (535)

कठिन शब्दार्थ - काडु-जंगल, वाट्टम-दुःख, ओट्टरा-दौड आकर, कै पट्रि-हाथ पकडना, कूट्टुदल-गले लगाना, कूडल-गोल आकार।

भावार्थ - विवाह के बारे में लोगों का विश्वास है कूडल। याने प्रेमिका अपने प्रेमी को मन में सोचकर आँखें मूंदकर उंगली से रेत पर एक गोल आकार रचेगी। इसमें एक सिरा दूसरे के साथ मिल जाती तो उसकी इच्छा पूर्ण हो जाएगी। यदि न मिल जाती तो उसकी इच्छा पूर्ण होने में देर लगेगी। इस प्रकार अपनी उंगली से आँखें मूंदकर रेत पर गोल आकार खींचने को 'कूडल' कहते हैं। यहाँ गोदा अपने प्रेमी श्री वेंकटेश्वर के साथ अपने मिलन को सोचकर गाती है। याने, ''जंगल के बीच स्थित तिरुवेंकटगिरि पर और सुन्दर शहर कण्णपुरम् में दुःख और वेदना तजकर खुशी से निवास करने वाला और वामन अवतार लिए भगवान कृष्ण दौड आकर मेरे हाथ को पकडकर उसके साथ मुझे आलिंगन कर ले ऐसा मुझे मिलाओ।''

मतलब यह है कि भगवान कृष्ण अपने भक्तों के लिए जंगल में भी रहने वाले हैं और शहर में भी। श्रीराम के अवतार में वे दंडकारण्य में रहते थे और ऋषियों के साथ प्रसिद्ध शहर अयोध्या में भी। वे कृष्ण के रूप में वृन्दावन में भी रहते थे और मथुरा में भी। ऐसे कृष्ण के साथ उसका मिलन संभव है तो उससे मिला दे।

क्रमशः

मई महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मोबाइल - 9989376625

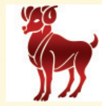

मेष राशि - नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी। पारिवारिक सुख-सौहार्द्र में वृद्धि, शैक्षणिक विकास, संतान सुख। राजकीय सहयोग, भ्रातृसुख, रूका धन वापस होगा। भ्रमण, तीर्थाटन का योग लगेगा।

वृषभ राशि - स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखे। अपने प्रयासों से कामों में सफलता मनोबल की वृद्धि, संतान सुख, रोजी रोजगार में अनुकूलता। यात्रा में रूचि, शुभ कार्यों में व्यय। दाम्पत्य सुख। विद्या-बुद्धि का विकास, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन राशि - वात-कफ-पित्तजन्य पीड़ा होगी। घर-परिवार की चिन्ता, व्यावहारिक जीवन में संयम जरूरी है। इष्टमित्रों से अनुकूलता, सामयिक कार्यों में सफलता, स्थान परिवर्तन योग संभव है। गृहस्थ जीवन सुखी। शैक्षणिक अनुकूलता।

कर्कट राशि - आरोग्य सुख, आर्थिक सन्तुलन, रोजी-रोजगार में सफलता। अध्ययन में रुचि बढेगी। वाणी व्यवहार को नियंत्रित रखने से अनेक कार्य सिद्ध होंगे। गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। आध्यात्मिक विकास। सन्तान पक्ष की उन्नति।

सिंह राशि - स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। सन्तानसुख एवं पारिवारिक सुख में थोड़ी बाधा होगी। लाभ के अवसरों का फायदा उठाना चाहिए। पारिवारिक दायित्व बढ़ेंगे। समाज में मान-सम्मानों में वृद्धि होगी। निकट स्वजनों का सहयोग, विद्या में प्रगति होगी।

कन्या राशि - वात-कफदोष एवं उदरविकार सम्भावित रहेगा। कार्यों में सकारात्मक प्रगति, विरोधियों पर दबाव, वाहन सुख, पठन-पाठन में रुचि, स्वास्थ्य के प्रति सावधानी जरूरी है। गृह-भूमि, कृषि-कार्यों में सफलता होगी।

तुला राशि - स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। रुके कामों में प्रगति होगी। संतान सुख, उद्योग व्यापार सामान्य रहेगा। गृह कष्ट, पत्नी के साथ मनमुटाव होगा। पारिवारिक उत्तरदायित्व। आमदनी से ज्यादा धन व्यय। अपनों का सहयोग मिलेगा। अपने वाणी पर नियंत्रण रखें।

वृश्चिक राशि - कार्यक्षेत्रों में अधिकारियों के साथ रिश्ते अच्छे बनाकर रखें, लाभदायक सिद्ध होगा। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। अपने काम के प्रति पूर्ण रूप से एकाग्रचित्त रहें। किसी मित्र की सलाह आपके व्यवसाय के लिए बहुत ही लाभदायक रहेगी।

धनु राशि - स्वास्थ्य सुख सामान्य रहेगा। महिलाओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है। उन्हें अपनी योग्यता और कार्य क्षमता का प्रदर्शन करने का भरपूर मौका मिलेगा।

मकर राशि - अनावश्यक तनाव-विवाद से बचे। व्यवसायिक गतिविधियों में अपने प्रतिद्वंद्वियों की गतिविधियों को नजर अंदाज न करें। प्रतियोगिता परीक्षा में पूरे आत्मविश्वास से कामयाबी हासिल करेंगे। तकनीकी कामों से जुडे बिजनेस में बेहतरीन सफलता प्राप्त हो सकती है।

कुम्भ राशि - मास-फल मिश्रित प्रभावकारी रहेगा। शारीरिक व्यथा, पारिवारिक समस्या का समाधान होगा। स्त्री-सन्तानादि से सहानुभूति की प्राप्ति होगी। कार्य-क्षेत्र की विघ्न बाधाओं का निवारण।

मीन राशि - मास-फल सामान्य रहेगा। अपने आप पर संयम रखे। जोश-क्रोध एवं उतावलेपन से बना काम भी बिगड़ेगा। नये लोगों से सम्पर्क, कर्म क्षेत्र का विस्तार, वांछित सफलता मिलेगी, उद्योग-धन्धों में अनुकूलता विद्यार्थियों का अध्ययन क्रम ठीक रहेगा। पारिवारिक वातावरण उल्लास-पूर्ण रहेगा। संतान सुख प्राप्त होगा।

मूँग दाल

- डॉ.सुमा जोषी, मोबाइल - 9449515046.

आरोग्य को सही रखने के लिए दालों का सेवन करना अच्छा माना गया है। विभिन्न प्रकार के दालों के सेवन से कई तरह के पोषक तत्व शरीर को मिलते हैं। आज हम मूँग दाल के बारे में जानेंगे। आयुर्वेद में इसे मुद्ग (Mudgal) कहा जाता है।

मूँग दाल में विटामिन-बी, सी, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, कॉपर, फाइबर की प्रचुर मात्रा पाई जाती है। यह आसानी से पच-जाती है। यह अन्य दाल से पचने में हलका और पेट के लिए सही माना जाता है। जिनका पाचनशक्ति कमजोर हो, उनके लिए यह बहुत अच्छा है। इसमें मौजूद फाइबर पाचन तन्त्र को मजबूत बनाने केलिए उपयोगी मानी जाती है। वजन कंट्रोल करने के लिए और कब्ज की समस्या को दूर करने के लिए इसका सेवन बहुत फायदेमन्द माना जाता है। इसमें कैलोरी की मात्रा कम होने से वजन को नियंत्रित करने में बहुत उपयोगी मानी जाती है। डेगूँ में और सामान्य ज्वर में मूँग दाल का सेवन बहुत फायदेमन्द माना जाता है। शरीर को रोगप्रतिरोधक क्षमता को भी यह बढ़ाता है।

परिचय

Latin Name / Botanical Name - Vigna Radiata

Family - Leguminosae

इसे संस्कृत में मुद्ग, कन्नड में हेसरुबेले, तेलुगु में पच्च पेसलु / पेसरु पप्पु / पेसलु कहा जाता है। अंग्रेजी में ग्रीन ग्राम अथवा मुँग बीन कहा जाता है। रस में मधुर, विपाक में - तीख (पचने के बाद), गुण में सूखा, हल्का होता है। वीर्य में शीत है।

विशिष्ट गुण

१) दृष्टि प्रसार-आंखो के लिए अच्छा होता है।

२) ज्वरहन बुखार से राहत देता है।

३) वर्ण्य - त्वचा की रंगत में सुधार करता है।

४) पुष्टिबलप्रद - शारीरिक शक्ति, पोषण और वृद्धि करता है।

५) कफ और पित्त दोष को संतुलित करता है। वातदोष को थोडा बढ़ा देता है।

आरोग्य में मूँग दाल का प्रयोग

१) इसके बारीक चूर्ण को पानी में मिलाकर फेस पैक की तरह चेहरे पर लगाये। सूखने पर धीरे से हटाये। यह ऊत्कों को भर देता है और त्वचा डिटॉक्सिफायर के रूप में कार्य करता है।

२) इसके सूप में थोडा नमक और काली मिर्च मिलाकर नियमित रूप से लेना चाहिए। यह भूख में सुधार करता है। यह त्वचा की शुष्कता और आन्त्र की आरोग्य के लिए अच्छा है।

३) मूँग दाल के पानी का नियमित सेवन करने से शरीर में मौजूद गन्दगी बाहर निकल जाती है। साथ ही इस दाल

के पानी में मौजूद तत्व लिवर, गॉल ब्लैडर, रक्त व आन्तों को भी साफ करता है।

४) मूँग दाल का पानी शरीर में इंसुलिन के लेवल को बढ़ाने में सहायक होता है। इसके अलावा मूँग दाल ब्लड ग्लूकोज को नियंत्रित रखता है। जिससे डायबिटीज को व्यवस्थित रखने में सहायता मिलती है।

५) शरीर की कमजोरी में मूँग दाल का सेवन फायदेमन्द होता है। यह शरीर की कमजोरी को दूर करने में मदद करता है।

६) एक प्रेशर कुकर में दो कप पानी गर्म कर लें। जब पानी गर्म हो जाये तब इसमें मूँग दाल और स्वादानुसार नमक डालकर २ से ३ सीटी तक पकायें। बाद में दाल को अच्छे से मैश कर लें। अब मूँग दाल का पानी सेवन के लिए पूरी तरह से तैयार है।

७) ५० ग्राम मूँग दाल को रात भर एक कटोरी में भिगो दें और सुबह इसे पीसकर बारीक पेस्ट बना लें। पेस्ट में १ चम्मच कच्चा शहद और एक चम्मच बादाम का तेल मिलाएँ। इस फेस पैक को अपने चेहरे पर समान रूप से लगाएँ। १५-२० मिनट बाद सामान्य पानी से धो ले। त्वचा में स्वस्थ चमक के लिए हर दूसरे दिन लगाएँ।

८) १/४ कप मूँग दाल को रात भर भिगो दें और सुबह इसे पीसकर बारीक पेस्ट बना लें। पेस्ट में दो बडे चम्मच घी मिलाएँ। इस पेस्ट से अपनी त्वचा को ऊपर की दिशा में मालिश करें। इस पेस्ट का प्रयोग सप्ताह में तीन बार करें।

९) २-३ चम्मच मूँग दाल की पेस्ट में दूध डालें। चेहरे और शरीर पर लगाकर ४-५ मिनट बैठें। नल की पानी से अच्छी तरह धो लें। रूखी और खुरदरी त्वचा से छुटकारा पाने के लिए हफ्ते में २-३ बार इसका प्रयोग करें।

१०) २-३ चम्मच मूँग दाल के पाउडर में थोडा-सा गुलाब जल और सेब का सिखा मिलाएँ। बालों पर और सर पर समान रूप से लगाएँ। २-३ घण्ठे बाद शैम्पू और पानी से धो लें। मुलायम और चमकदार बाल पाने के लिए इस उपाय को हफ्ते में १-२ बार उपयोग करें।

११) मूँग की दाल में विटामिन-बी६ और वी-५ आदि पर्याप्त मात्रा में मौजूद होते हैं। विटामिन-सी रेटिना को सही रखने के लिए उचित होता है। इस प्रकार मूँग दाल आँखों के लिए एक बेहतर विकल्प है।

१२) मूँग की दाल से मिलनेवाला कैल्शियम हड्डियों के निर्माण में आनेवाली बाधाओं को रोकता है। इसके साथ ही यह तनाव भी कम करने में उपयोगी होता है।

१३) गर्भवती महिलायें भी मूँग दाल का सेवन कर सकती हैं।

१४) मूँग की दाल का सूप हाइड्रेटेड रहने का बेहतरीन तरीका है। कई पश्चिमाई देशों में गर्मी के दिनों में मूँग की दाल का सूप पीना आम बात है। इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जो हीट स्ट्रोक, शरीर के उच्च तापमान को नियंत्रित करने में सहायक होती है।

१५) जब एक महिला गर्भवती होती है, उसे बहुत सारे फोलेटयुक्त खाद्य पदार्थ खाने की सलाह दी जाती है। क्योंकि बच्चे के इष्टतम विकास के लिए यह अवश्य है। मूँग फोलेट का एक बडा स्रोत है।

सावधानियाँ

१) ठीक से पकाया नहीं तो चक्कर आना, दस्त और मतली हो सकती है। २) ठीक से साफ ना किया हो तो बैक्टीरिया बढ़ने का खतरा अधिक होता है जिससे पेट में दर्द होती है। ३) कुछ लोग संवेदनशील होते हैं। ऐसे लोग इसका उपयोग ना करें। ४) मूँग दाल को रोजाना लेने से सांस की तकलीफ, खुजली, मतली, उल्टी और दस्त जैसे दुष्प्रभाव हो सकते हैं। ५) पकाते समय अधिक नमक या तेल का उपयोग करना इसके लाभों को उल्टा कर सकता है।

यहाँ पर जानकारी के लिए दी गयी है। कोई भी अधिक मात्रा में नहीं होनी चाहिए। कुछ भी संदेह होतो संबंधित आयुर्वेद वैद्य की सलाह लें। सुरक्षित रहें। अपना ध्यान रखें।

दान से भी श्रेष्ठ है ईश्वर के प्रसाद

- श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

आचार्य कमलेन्द्र का गुरुकुल शिक्षा एवं अनुशासन के लिए धर्मपुर में ही नहीं पूरे देश में प्रसिद्ध था। इसलिए अनेक विद्यार्थी विभिन्न स्थानों से वहाँ आकर अपने ज्ञान का विकास कर रहे थे। आचार्य अपने विद्यार्थियों को साहित्यिक ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान भी दिलाते थे। इससे उनके शिष्यों को ज्ञान के विकास के साथ अनुशासन का पाठ भी मिल जाता था। इससे वे समाज में एक आदर्श नागरिक के रूप में अपना जीवन यापन करते थे और सबका आदर पात्र बने रहते थे।

गुरूजी रोज अपने शिष्यों को पाठ सिखाने के पहले बडे सबेरे उठकर स्नानादि करके ईश्वर की उपासना एवं भजन में बैठ जाते थे। गुरुकुल में पढने वाले शिष्य भी उनके साथ भजन में शामिल हो जाते थे। गुरूजी ईश्वर की उपासना के पहले भगवान की मूर्ति के सामने मिष्टान्न, फल, फूल आदि निवेदन के रूप में रखते थे। घंटों भजन करने के बाद ही पाठ सिखाने का काम प्रारंभ होता था।गुरूजी ईश्वर के सामने रखे मिष्टान्न, फल, फूल आदि को ईश्वर के प्रसाद के रूप में अपने शिष्यों को दे देते थे। यह कार्य उनके गुरुकुल में रोज चलता था।

एक दिन भजन के समाप्त होने के बाद वे हमेशा की तरह प्रसाद को अपने शिष्यों में वितरित कर रहे थे। तब उनका एक शिष्य सुरेन्द्र जो अंत में अपने गुरु के निकट आया था, उसे अनार का फल प्रसाद के रूप में मिला था। उसने आचार्य को प्रणाम करके बडी नम्रता से वह प्रसाद ले लिया। तब वह अपने गुरु को देखकर विनत भाव से कहा, ''गुरुवर मुझे एक बात का बडा संदेह है। क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ।'' गुरु ने बडे हर्ष से कहा, ''वत्स! बताओ तुम्हारा ऐसा क्या संदेह है?''

सुरेन्द्र ने धीमी आवाज में कहा, ''गुरुवर! आप ईश्वर के भजन में इतना फल आदि रखकर उनकी पूजा करते हैं। भजन के बाद उन सब फलों को हम हीं को खाने को देते हैं। कभी मैंने देखा नहीं है कि निवेदन में रखे गए फलों को भगवान ने लिया है। ऐसी हालत में हमें भगवान को निवेदन के रूप में उन फलों को रखने का क्या फायदा है? उसके बदले भगवान से न खाए जाने वाले उन फलों को निवेदन में न रखकर शिष्यों को दे सकते हैं न?''

गुरूजी ने सुरेन्द्र की बात को बडे ध्यान से सुना फिर एक मुस्कुराहट के साथ कहा, ''वत्स! तुम्हारा कहना सही है। पर मैं तुम्हारे इस संदेह को और एक दिन दूर करता हूँ।'' गुरु का कहना सुनकर सुरेन्द्र वापस लौटा। समय बीतता गया। विद्यार्थी सब अपनी शिक्षा को समाप्त करके घर वापस लौटने वाले थे। गुरु ने अपने विद्यार्थियों को आशीर्वाद देकर कहा कि तुम सब आदर्शवान बने रहो। उन्होंने भी गुरूजी की इच्छा को पूर्ण करने का बीडा उठा लिया। सब विद्यार्थी अपने घर निकलने की तैयारी में थे। तब सुरेन्द्र अपने गुरूजी के निकट आकर बडी नम्रता से कहा, ''गुरुवर! मैंने कुछ समय पहले आपसे अपना संदेह दूर करने के लिए कहा था। तब आपने कहा कि बाद में बताता हूँ। अब मैं घर के लिए निकल रहा हूँ, कृपया आप मेरे संदेह को दूर करने का कष्ट करें।''

सुरेन्द्र की बात से गुरूजी बहुत खुश हुए और उन्होंने उसका संदेह दूर करते हुए कहा, ''वत्स! तुम्हारे मन में ईश्वर के लिए अर्पित निवेदन की चीजों के बारे में उठा संदेह स्वाभाविक है। अब तुम मुझे गीता के कुछ श्लोकों को अपनी पुस्तिका को देखे बिना बताओ।'' गुरु के कहे

अनुसार सुरेन्द्र ने गीता के श्लोकों को अपने सुरीले कंठ में सुनाया। उसे सुनकर गुरूजी ने मुस्कारकर कहा, अब तुम अपनी पुस्तिका में उन श्लोकों को दिखाओ।

सुरेन्द्र ने अपनी पुस्तिका को उठाकर उन सब को दिखाया। अब गुरूजी ने उसे देखकर सवाल किया, ''वत्स! तुमने जिन श्लोकों को सुनाया था वे सब अब भी इस पुस्तिका में हैं, वे कहीं घुम तो नहीं हुए हैं।'' तब सुरेन्द्र ने कहा, ''गुरुवर! इस पुस्तिका के श्लोकों को मैंने कंठस्थ कर लिया है, उन सबको मैंने अपनी दिमाग से ग्रहण कर लिया है।''

यह सुनकर गुरु ने कहा, ''प्रिय वत्स! जिस प्रकार पुस्तिका में होने वाले श्लोक तुम्हारी दिमाग में आ गए हैं, वैसे ही ईश्वर की उपासना में रखे गए निवेदन भी, पर भगवान उसे अपने मन में ग्रहण कर लेंगे। हम उस निवेदन की चीजों को प्रसाद के रूप में सबको बांटते हैं। तब सब लोगों को भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता है।'' यह सुनकर सुरेन्द्र ने सवाल उठाया, ''गुरुवर! उसके बदले हम उन चीजों को सीधे गरीबों में बांट सकते हैं न?''

गुरु ने जवाब में कहा, ''वत्स! इस बात को ध्यान में रख लो। हम ईश्वर की उपासना के समय जिन चीजों को अधिक पसंद करते हैं, उन्हीं को निवेदन के रूप में रखते हैं। उपासना के बाद उन चीजों पर ईश्वर की कृपा फैल जाती है और हम उनको प्रसाद कहकर सबको बांटते हैं। इसके बदले जिन चीजों को हम गरीबों में वितरित करते हैं उसको दान कहते हैं। दान में सिर्फ दया की भावना होती है, पर प्रसाद में ईश्वर की महान कृपा और आशीर्वाद भरी रहती है। इसलिए ईश्वर के आशीर्वाद से भरपूर प्रसाद दया से भरपूर दान से भी श्रेयस्कार है।'' गुरूजी के ऐसे जवाब से शिष्य सुरेन्द्र का मन संतुष्ट हुआ और उसका संदेह भी दूर हो गया। अब वह उनके चरणों को छूकर नमस्कार करके घर की ओर निकल पडा।

'क्विज'

- डॉ.एन.दिव्या

१) हनुमान जी का जन्म कहाँ हुआ है?

अ) अंजनाद्री　आ) वेंकटाद्री　इ) गरुडाद्री　ई) नारायणाद्री

२) श्री रामानुजाचार्य जी की बृहद मूर्ती की स्थापना हाल ही में कहाँ हुई है?

अ) माचेर्ला　आ) चेर्लोपल्ली　इ) मुच्चिंतला　ई) मंचीर्यला

३) 'सौंदर्यलहरी' किसकी रचना है?

अ) रामानुजाचार्य　आ) आदिशंकराचार्य　इ) विश्वनाथाचार्य　ई) कृष्णमाचार्य

४) परशुरामजी का गुरु इन में से कौन है?

अ) विष्णु　आ) गणेश　इ) ब्रह्म　ई) महेश्वर

५) तरिगोंडा वेंगमाम्बा की समाधी कहाँ पर स्थित है?

अ) तिरुमल　आ) तिरुपति　इ) तिरुचानूर　ई) श्रीनिवासमंगापुरम्

६) हनुमान जी को कभी युद्ध में न थकने का वरदान किसने दिया था?

अ) इन्द्र　आ) विष्णु　इ) यमराज　ई) राम

७) महाभारत में धर्म पुरुष किसे कहा गया?

अ) भीष्म　आ) युधिष्ठिर　इ) श्रीकृष्ण　ई) कर्ण

जवाब

१) अ　२) इ　३) आ　४) ई　५) अ　६) इ　७) आ

चित्रकथा

हनुमान की भक्ति कहानी

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री के.द्वारकानाथ

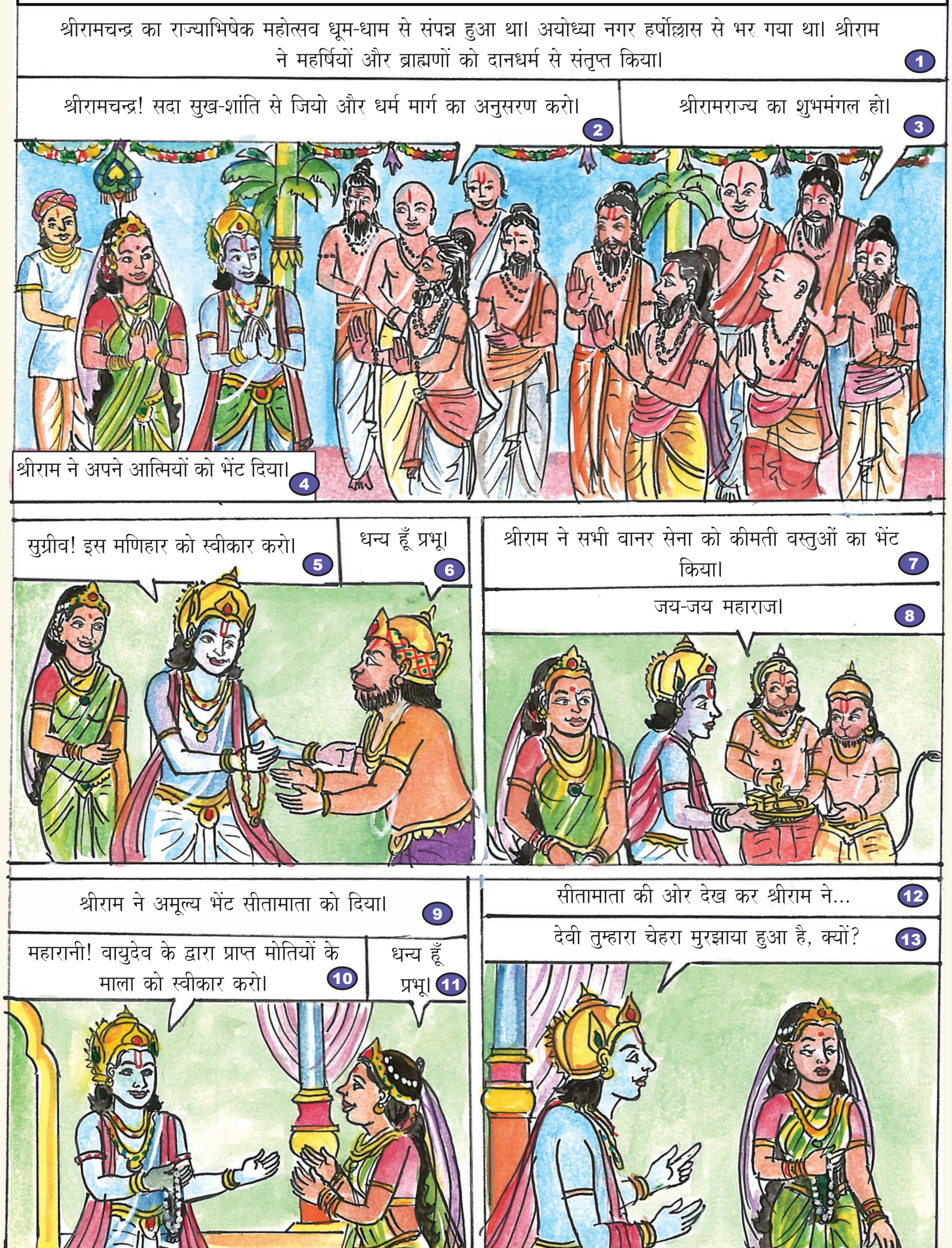

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु। स्वस्ति।

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्रीरामनवमी	अ) सूर्य-मकर राशि प्रवेश
2) दीपावली	आ) श्रावण पूर्णिमा
3) गरुड़पंचमी	इ) चैत्र मास-नवमी
4) संक्रांति	ई) अश्विन अमावस्या
5) राखी	उ) श्रावण पंचमी

1) इ 2) ई 3) उ 4) अ 5) आ

श्री नृसिंह महामंत्र

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं
ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं
मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।।

चित्र में अंतर खोजे!

1) सूर्य
2) पक्षी
3) केले का पत्ता
4) बगीचे की बाड़
5) झाड़ी
6) बगीचे में एक चिड़िया
7) चटाई

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 02-04-2022 को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में संपन्न 'शुभकृत्' नामक (तेलुगु नूतन वर्ष) 'उगादि आस्थान'। इस अवसर पर फल-पुष्प प्रदर्शन का आयोजन किया गया।

2022, अप्रैल 04 से 06 तक तिरुमल स्थित धर्मगिरि श्री वेंकटेश्वर वेदविज्ञान पीठ में संपन्न 'श्री लक्ष्मीश्रीनिवास धन्वंतरी महायाग' के दृश्य।

दि. 03-04-2022, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.जवहर रेड्डी जी, आई.ए.एस., ने 'टाटा कान्सर अस्पताल' और 'स्विम्स अंकालजी विभागों' के निर्माणों का निरीक्षण किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. तिरुपति संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., स्विम्स निदेशिका डॉ.वेंगम्मा, टाटा कान्सर अस्पताल के कार्य प्रभारित डॉ.बी.आर.रमणन् और अन्य ति.ति.दे. उच्च अधिकारियों ने भाग लिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-04-2022 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.